नागांचल

सत्रहवाँ अंक वार्षिक 2019

सत्यमेव जयते

कोहिमा स्थित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन, प्रचार व प्रसार का वार्षिक प्रतिबिंब

हिंदी पखवाड़ा 2018 के समापन समारोह में (बायें से) क्रमशः सम्मानित अतिथि श्री सत्य प्रकाश त्रिपाठी, मुख्य वन्यजीव वार्डन, नागालैण्ड, नराकास उपाध्यक्ष श्री ए. पी. चोफी, नराकास सचिव श्री काहोतो जे येप्थोमी एवं श्री निखिल चक्रवर्ती, उप महालेखाकार (ले.प.), नागालैण्ड मंगल दीप प्रज्ज्वलित करते हुए।

:: मुख पृष्ठ ::

विश्व प्रसिद्ध
हॉर्नबिल महोत्सव नागालैण्ड
के पारंपरिक कार्यक्रम की
एक झलक

हिंदी पखवाड़े के समापन समारोह में (बायें से) क्रमशः सम्मानित अतिथि श्री सत्य प्रकाश त्रिपाठी, मुख्य वन्यजीव वार्डन, नागालैण्ड, नराकास उपाध्यक्ष श्री ए. पी. चोफी, नराकास सचिव श्री काहोतो जे येप्थोमी, श्री निखिल चक्रवर्ती, उप महालेखाकार (ले.प.), नागालैण्ड द्वारा सभा को संबोधित करते हुए एवं श्री रोहित भट्ट, सहायक निदेशक, दूरदर्शन केन्द्र, कोहिमा द्वारा माननीय केन्द्रीय गृहमंत्री द्वारा जारी हिन्दी दिवस का संदेश पाठ करते हुए।

सत्यमेव जयते

नागांचल

सत्रहवाँ अंक

हिंदी वार्षिक पत्रिका
2019

कोहिमा स्थित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन, प्रचार व प्रसार का वार्षिक प्रतिबिंब

प्रधान महालेखाकार (ले. व ह.) एवम् महालेखाकार (ले.प.) का कार्यालय
नागालैण्ड, कोहिमा

आइये, हम निम्नलिखित काम हिन्दी में करें

- ❖ सभी वार्तालाप में अपनी अभिव्यक्ति हिन्दी में ही करें।
- ❖ धारा 3(3) के कागजात हिन्दी/द्विभाषी में ही जारी करें।
- ❖ केवल हिन्दी/द्विभाषी में बने फॉर्म/मसौदे का ही प्रयोग करें।
- ❖ अपना हस्ताक्षर रोमन लिपि के बदले देवनागरी लिपि में करें।
- ❖ फाइलों पर विषय अनिवार्य रूप से हिन्दी/द्विभाषी में ही लिखें।
- ❖ कम्प्यूटरों में हिन्दी का इस्तेमाल यूनीकोड प्रणाली द्वारा बढ़ाएँ।
- ❖ हिन्दी न जानने वालों को हिन्दी सीखने में सहयोग, प्रोत्साहन व मार्गदर्शन दें।
- ❖ सभी फाइल कवर, पत्र शीर्ष, नामपट्ट, साइनबोर्ड व रबर स्टाम्प द्विभाषी रूप में ही बनवायें।

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित रचनाकारों के हैं। सम्पादक मण्डल का उनके विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं है

सत्यमेव जयते

अध्यक्ष एवम् संरक्षक की कलम से....

मुझे प्रसन्नता है कि नगर राजभाषा कार्यान्वियन समिति, कोहिमा द्वारा "नागांचल" के सत्रहवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वियन में नगर राजभाषा कार्यान्वियन समिति की अहम भूमिका रही है और उत्तर पूर्व भारत में इस पत्रिका के प्रकाशन से हिन्दी के प्रचार-प्रसार को एक नयी दिशा मिलेगी, ऐसी मुझे उम्मीद है। समिति का प्रत्येक कार्य आप सभी के सहयोग से सफल होगा, हम सब समिति के कार्य से जुड़ें हैं, हम सब मिलकर यह कार्य पूरी निष्ठा से अपनाएँगे एवं समिति को शीर्ष पर लेकर जाएंगे।

इस पत्रिका के प्रकाशन में जिन लोगों ने लेख, कवितायें, कहानियाँ आदि प्रकाशानार्थ भेजी हैं उन सभी का आभार।

मैं इस पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनायें देता हूँ और आशा करता हूँ कि "नागांचल" पत्रिका राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में निरंतर सहायक सिद्ध होगी।

(ई. म्होन्बेमो पाटोन)
अध्यक्ष, नराकास, कोहिमा
एवं
प्रधान महालेखाकार (ले.व ह.) नागालैण्ड

सत्यमेव जयते

उपाध्यक्ष की कलम से......

आप सभी के सामने नागांचल पत्रिका के नवीनतम अंक को रखते हुए मुझे अत्यन्त हर्ष हो रहा है। इस अंक में विविध रचनाओं को सम्मिलित करके विविधता में एकता लाने का प्रयास किया जा रहा है।

आशा है कि पत्रिका आपकी उम्मीदों पर खड़ी उतरेगी।

अंत में पत्रिका के सफल संपादन एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

(ए.पी. चोफी)
उपाध्यक्ष, नराकास, कोहिमा एवं
महालेखाकार (ले.प.) नागालैण्ड

सत्यमेव जयते

सचिव, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कोहिमा के दो शब्द...

आप सभी के सहयोग, प्रोत्साहन, सुझाव व सहयोग से "नागांचल" के 17 वें अंक को आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत खुशी हो रही है। हिन्दी प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देना एवं कार्यालय में अधिकारियों, कर्मचारियों के बीच हिन्दी के प्रति रुझान को बढ़ाने में यह सहायक सिद्ध होगी, ऐसी मैं उम्मीद करता हूँ। नागांचल के इस अंक में मेरा ये प्रयास रहेगा कि पत्रिका में ज्ञानवर्धक व मनोरंजक विषयों का समावेश हो।

मैं आशा करता हूँ कि इस पत्रिका के प्रकाशन से राजभाषा हिन्दी के प्रयोग व प्रसार को बढ़ावा देने में उपयोगी सिद्ध होगा।

(उत्तम चंद)
सचिव, नराकास, कोहिमा, एवं
उप महालेखाकार (ले.व ह.) नागालैण्ड

संदेश

(विवेक कुमार भास्कर)
वरिष्ठ उप महालेखाकार (ले.प.)
नागालैण्ड, कोहिमा

सत्यमेव जयते

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि "नागांचल" आज अपने प्रकाशन के 17 वे वर्ष में प्रवेश कर चुका है। ऐसे उल्लासमय माहौल में आप सभी को हार्दिक बधाई। इस अवसर पर मैं इस पत्रिका की सफलता में सहयोग देनेवाले सभी रचनाकारों, मित्रों एवं नराकास के सदस्यों को भी तहेदिल से धन्यवाद देता हूँ। साथ ही मुझे विश्वास है कि राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका अत्यंत सहायक सिद्ध होगी।

पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु शुभकामनाएँ।

विवेक

(विवेक कुमार भास्कर)
वरिष्ठ उप महालेखाकार (ले.प.) नागालैण्ड

संरक्षक
ई. म्होन्बेमो पाटोन
प्रधान महालेखाकार (ले. व ह.) नागालैण्ड
एवं अध्यक्ष, नराकास, कोहिमा

स्वत्वाधिकार
प्रधान महालेखाकार (ले. व ह.) नागालैण्ड
एवं अध्यक्ष नराकास, कोहिमा

प्रकाशन
"नागांचल"
हिंदी वार्षिक पत्रिका
अंक - 17, वर्ष सितंबर 2019

प्रकाशक
प्रधान महालेखाकार का कार्यालय,
नागालैण्ड, कोहिमा एवं अध्यक्ष,
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कोहिमा

मूल्य
राजभाषा के प्रति निष्ठा

मुख्य संपादक
प्रेम कुमार क्षत्री

सह सम्पादक
अनंत राम

सम्पर्क
प्रधान संपादक
प्रधान महालेखाकार (ले. व ह.) का कार्यालय
नागालैण्ड, कोहिमा-797001
भ्रमणभाष : 09436434354
08638121624

संपादकीय

"नागांचल" का प्रस्तुत अंक सुधि पाठकों को समर्पित करने मुझे जो आत्मगौरव व परम आनंद का अनुभव हो रहा है उसके लिए ईश्वर एवं नाराकास, कोहिमा के माननीय अध्यक्ष, सचिव व समस्त रचनाकारों के साथ-साथ पाठकों का कृतज्ञ हूँ। मुझे इस क्षेत्र में हमेश प्राप्त सहभागिता से जो आत्मसंतुष्टि का एहसास होता है वह वर्णातीत है।

भारतवर्ष, जैसे बहुभाषिक राष्ट्र में इसकी ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक व वैज्ञानिक विधाओं में विद्वानों के चिंतन व धरोहर को संजोए रखने में हिन्दी भाषा की अद्वितीय भूमिका से हम सब भलि-भांति अवगत ही हैं। 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने हिन्दी को राजभाषा का दर्जा देने के पश्चात अपने विकास पथ पर अनेक उतार-चढ़ाव व संकटों को झेलते हुए आज कम्प्युटर-इंटरनेट क्षेत्र में हो या वैश्विक बाजार व्यवस्था, दुनिया की सारी संगीत-विज्ञापन चैनल हो या मनोरंजन से संबंधित जरूरत, सभी विधाओं में हिन्दी का वर्चस्व कायम है। देश-विदेशों को एक दूसरे के निकट लाने में इसे सबसे सहज-सरल व वैज्ञानिक संपर्क भाषा के रूप में प्रयोग में लाया जा रहा है। राजभाषा हिन्दी की इस गरिमामय यात्रा व उपलब्धियों से अवगत होने के बावजूद कुछ लोग इसे दिल से अपनाने में हिचकिचाहट महसूस करते व इसे सीखने के लिए रोमन लिपि का सहारा लेते हुए दिखाई देते हैं। इतना ही नहीं वे हिन्दी बोलते समय इसे अंग्रेजी लहजे में ही बोलना पसंद करते हैं। उदाहरणतया योग को "योगा", केरल को "केरला", रामायण को "रामायणा" इत्यादि। इस प्रकार ऐसा प्रतीत होता है कि वे हिन्दी की वैज्ञानिक लिपि की वास्तविकता को भूलते जा रहे हैं जो कि इसकी अनेक विशेषताओं में एक महत्वपूर्ण विशेषता है- "जैसा उच्चारण करते हैं वैसा ही लिखते हैं और जैसा लिखतें हैं वैसा ही उच्चरित करते हैं।"

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कोहिमा के सदस्य कार्यालयों के तत्वावधान में राजभाषा हिन्दी के उदात्त कार्यान्वयन, प्रचार-प्रसार का वार्षिक प्रतिबिंब के रूप में प्रधान महालेखाकार (ले.व.ह.) व महालेखाकार (ले.प.) नागालैण्ड, कोहिमा के स्वत्वाधिकार में प्रकाशित वार्षिक "नागांचल" पत्रिका के द्वारा नागालैण्ड जैसे हिंदीत्तर क्षेत्र में इन छोटी-छोटी खामियों को इंगित करते हुए हिन्दी के प्रभाव को बलिष्ठ बनाने की दिशा में किया गया विनम्र प्रयास है। "नागांचल" को इस मुकाम तक पहुँचने में नराकास, कोहिमा के समस्त मौलिक रचनाकारों, अतिथि लेखकों व सुधि पाठकों के सकारात्मक प्रतिक्रियाओं व सुझाओं के लिए उन्हें तहे दिल से आभार व्यक्त करता हूँ और हमारी यही प्रार्थना है कि भविष्य में भी वे अपना प्यार व आशीर्वाद इसी प्रकार बनाए रखेंगे। इन्ही शब्दों के साथ मैं "हिंदी पखवाड़े" की हार्दिक मंगलमय शुभकामनाओं के साथ-

"जय हिंदी भाषा जननी", "वंदे मातरम।"

प्रधान संपादक

नागांचल, सत्रहवाँ अंक, वर्ष 2019, मूल्य - राजभाषा के प्रति निष्ठा

विषय सूची

विषय	लेखक	पृष्ठ
मेरी राजभाषा हिंदी	दिलीप गोंडान	1
भ्रष्टाचार उन्मूलन नए भारत का निर्माण	प्रिस्का एन. य्होमे	3
नेताजी सुभाष चन्द्र बोस नागालैण्ड में	जगदम्बा मल्ल	4
जेलियांग जनजाति और इसकी सामाजिक संरचना	थुन्बुई	7
रेडियो एक प्रभावी माध्यम	निशिकांत जोशी	16
बच्चों की परवरिश में प्यार के साथ-साथ संस्कार भी जरुरी	जे एस नायर	17
माधव कन्दली की रचनाओं में राम	चित्तरंजन लाल भारती	19
स्वस्थ्य शरीर है सबसे बड़ा खजाना	शाकिर अहमद	21
बुलन्द हौसलों की कहानी	सतेन्द्र कुमार	22
स्वयं, स्वयं सहायता	सुश्री श्रेयसी भौमिक	23
नवोदय एक परिचय	चंद्र केतु नारायण सिंह	24
पूर्वोत्तर भारत (असम) के विशिष्ट स्वतंत्रता संग्रामी नेता	प्रेम कुमार क्षत्री	25
समाज का असहाय वर्ग	अलीना	29
प्रेरणात्मक कहानी	अहना परवीन	30
कठिन एवं सख्त प्रशिक्षण	फरीदा परवीन	31
हिन्दी राष्ट्रभाषा से राजभाषा तक	प्रमोद रजक	32
अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का जुनून	रूम सिंह	33
पावन मिट्टी	अलीना परवीन	35
मैं नारी हूँ	हेमलता छेत्री	36
ऐसी होती है माँ	रेमा जेयन	37
नारी	फरीदा परवीन	38
बीबी फौज वाले की	मुकेश कनौजिया	39
एक बात समझ में आई नहीं	मुकेश कनौजिया	41
गत अंक के बारे में सुधी पाठकों की प्रतिक्रिया		43

कनिष्ठ अनुवादक : दिलीप गोंडाने
मुख्यालय, 15 सी. स. कृ. बल
कोहिमा (नागालैण्ड)

मेरी राजभाषा हिंदी

जान से प्यारा भारत देश है मेरा। मेरे देश में गुजरात से लेकर नार्थ-ईस्ट नागालैण्ड तक तथा कन्याकुमारी से लेकर स्वर्ग कश्मीर तक, पूर्व से पश्चिम तक, उत्तर से दक्षिण तक कई भाषाएं, उपभाषाएं, बोलियाँ व उपबोलियाँ बोली जाती है। मेरे देश में अनेक भाषाए होते हुए भी अनेकता में एकता के दर्शन देखने को मिलता है मेरा देश ऐसा एक देश है। जिसमें सभ्यता, सांस्कृतिक गरिमा, भारतीय साहित्य, भारतीय आदर्श, जीवन के शाशवत मूल्यों तथा समान रूप वाली वाणी दिखाई देती हैं, जो किसी भी देश में ढुंढने से नही मिलेंगी। मेरे देश में सांस्कृतिक एकता और विचारों की पावन गंगा बहती है। भाषा इस देश में रहने वाले मानव को मानव से जोड़ती है। भाषा मानव के विचारों को आदान प्रदान करती है। भाषा के द्वारा ही भारत देश की विभिन्न परंपराओं, संस्कृतियों और मान्यताओं तथा विश्वासों को समझा जा सकता है। मेरे देश में पारस्परिक स्नेह, भाईचारा तथा सांस्कृतिक एकता और अखंडता को बनाए रखने में भाषा ही महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। भारत देश की सामाजिक संस्कृति के विकास के लिए हिंदी महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

स्वतंत्रता से पूर्व एवं बाद में अनेक रियासतों एवं सरकार का प्रशासनिक कामकाज अंग्रेजी में न होकर हिन्दी में चलता था। मुसलमानों के शासनकाल में संस्कृत भाषा का प्रयोग समाप्त हो गया था और प्रशासनिक भाषा पर अरबी-फरसी का प्रभाव पड़ा था। उस समय सरकार, तहसीलदार, वकील, चपरासी, सिपाही, अमीन, जिला, दफ्तरी, खजांची, माल कमान आदि के शब्द प्रशासनिक कामकाज में प्रयोग

किया गया था और आज भी इसका प्रयोग किया जा रहा है। जैसै-जैसै समय बितता है, उसके साथ जीवंत भाषा नए शब्दों एवं अर्थो को अपनाती है और भाषा को नई दिशा मिलती है। अंग्रेजी शासनकाल में विज्ञान, शिक्षा, राजनीति एवं भौगेलिक क्षेत्र में परिवर्तन हुए। नये आयाम, नई दिशाओं को वाणी देने के लिए भाषा उसी अनुसार बदलती गई। अंग्रेजी-शासन काल में अंग्रजों ने अपनी सुविधा के लिए सरकारी कामकाज में हिंदी शब्दों का इस्तेमाल करना शुरू कर दिया था। आज

हमें मुकदमा, गवाह, खारिज, पेशी तथा अर्जी जैसे शब्दों के साथ साथ समन, जज, वारंट तथा एडवोकेट जैसे शब्दों भी देखने को मिल रहे है।

अंग्रेजी शासन समाप्त हो गया और भारत देश स्वतंत्र हुआ तो नवर्निमाण राष्ट्र लिए हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकृत और विकसित किया गया। क्योंकि भारत देश में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा हिंदी थी। इसे ही संपर्क भाषा के रूप में अपनाया गया। हिंदी भाषा को ज्ञान विज्ञान, अध्ययन-अध्यापन और साहित्य के साभ साथ प्रशासनिक भाषा के रूप में जोड़ा गया। हिंदी भाषा को सरकारी कामकाज, बोलचाल तथा कार्य व्यवहार कि भाषा बना दिया गया।

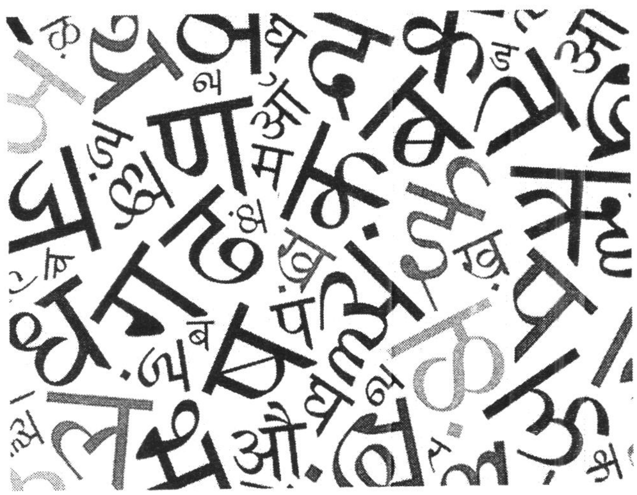

हिंदी भाषा ने संत कबीर, तुलसीदास, सूरदास, प्रसाद, पंत तथा महादेवी आदि महान व्यक्तियों को पहचान दी, उस भाषा को प्रशासन के क्षेत्र में जन-जन की भाषा होना ही था। हिंदी भाषा को आज विद्यालयों, कार्यशालाओं, प्रशासनिक संस्थाओं, न्यायालय, बैंकों, निजी संस्थाओं, रेलवे कार्यशालाओं में सरकारी पत्र व्यवहार के रूप में अपनाया गया है। राजभाषा के रूप में हिंदी को सरकारी कामकाज का माध्यम चुन लिया गया। भारत का संविधान जिन महानुभाव व्यक्तियों ने लिखा है उन्होंने हिंदी के महत्व को जाना समझा इसलिए हिंदी को राजभाषा और संपर्क भाषा के रूप में अंगीकार करने की व्यवस्था की।

भारत के संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार देवनागरी लिपि में लिखी हुई हिंदी भारत देश की राजभाषा होगी। हिंदी भाषा सरल एवं सबको समझ में आने वाली भाषा है, इसलिए प्रशासन के क्षेत्र में हिंदी को पूरी तरह से अपनाया गया। हिंदी में मशीन, डायरी, बस, कार, मोटर, बैंक, चेक-ड्राफ्ट, मनी आर्डर, रेडियों, सिनेमा, गैस कार्ड, मैनेजर, कमीशन, बिल आदि अंग्रेजी के शब्द का प्रयोग किया जा रहा है और यह शब्द बहुत ही लोकप्रिय रूप में चल रहे है। इसी प्रकार से सलाहकार बोर्ड, जांच कमेटी, वार्ड अधिकारी, जनाना वार्ड, सेमिनार कक्ष जैसे शब्द सामान्य बोलचाल की भाषा है और इसे प्रशासनिक कार्यो में पूरी तरह से स्वीकार कर लिया है। निजी क्षेत्र को भी अपना कर्तव्य समझना चाहिए कि हिंदी ही संपर्क भाषा होंगी और हिंदी इस देश की भाषा है। सभी क्षेत्रीय भाषाएं भारत देश की सभ्यता और संस्कृति की पोषक है परन्तु हिंदी का संबंध इस धरती, मिट्टी और यहां के जनमानस से हैं। क्षेत्रीय भाषाओं के विकास प्रचार व प्रसार संपर्क भाषा हिंदी के लिए संजीवनी शक्ति है। सभी क्षेत्रीय भाषाओं को जोड़ने का काम हिंदी भाषा करती आ रही हैं। हिंदी भाषा के कारण ही क्षेत्रीय भाषाओं की एकता में बल मिल रहा है। भारत देश में अपनी सुविधा के लिए अंग्रेजी भाषा को अपनाया गया है।

अंत में, भारत देश के प्रत्येक नागरिक, कर्मचारी तथा अधिकारी का यह राष्ट्रीय कर्तव्य है कि वे अपने दैनिक कार्य व्यवहार में राजभषा हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में प्रोत्साहित करते हुए उसका विकास करें।

मैं उस देश का वासी हू जिस देश में हिंदी बहती है।

जय हिंद, जय भारत।

भ्रष्टाचार उन्मूलन नए भारत का निर्माण

❑ प्रिस्का एन. व्होमे
सहायक (ले.प.) अधिकारी
महालेखाकार (ले.प.) का कार्यालय, नागालैण्ड

भ्रष्टाचार सत्ता में रहते हुए एक व्यक्ति द्वारा किया गया अनैतिक आचरण है विशेषतः घुसखोरी। दूसरे शब्दों में सत्ताधारी व्यक्ति द्वारा किया गया अनैतिक व्यवहार है।

भ्रष्टाचार के अनेक रूप है यथा घुसखोरी, बेईमानी, अपने कर्तव्यों की अवहेलना, सरकारी संपति का दुरूपयोग इत्यादि सभी भ्रष्टाचार के अन्तर्गत आते है।

भ्रष्टाचार के उन्मूलन के लिए भ्रष्टाचार के कारणों एवं प्रभावों को गहराई से समझने की आवश्यकता है। भ्रष्टाचार के कई कारण है। कुछ के लिए यह व्यक्तिगत लालच है तो कुछ के लिए व्यक्तिगत मूल्यों के पतन का कारण। कुछ अन्य जगहों पर भाई भतीजावाद भी जिम्मेवार है जिसके तहत सत्ताधारी व्यक्ति अपने रिश्तेदारों को नौकरी या अन्य कई लाभ प्रदान करता है या कई बार तो अनुचित सहायता भी ऐसे लोगों द्वारा प्रदान की जाती है भ्रष्टाचार के प्रभाव बहुयामी है। सामान्य दृष्टि से देखे तो यह अर्थव्यवस्था को पंगु बना रहा है कर चोरी एवं कालेधन के रूप में। व्यक्तिगत दृष्टि से जो सही हकदार है वे उनके शिक्षा, रोजगार व व्यापार के अवसरों से वंचित है।

अतः भ्रष्टाचार को जड़ से समाप्त करने के लिए प्रभावी एवं रणनीतिक कदम जिसमें एक सुदृढ़ इच्छाशक्ति शामिल होनी चाहिए। जब तक राजनीतिक एवं नौकरशाहों की इच्छाशक्ति सुदृढ़ न हो तब तक भ्रष्टाचार को समाप्त नहीं किया जा सकता है।

भाई भतीजावाद, पक्षपात एवं लालफीताशाही खत्म होनी चाहिए। प्रभावी नितियां बनाई जानी चाहिए जिनमें सशक्त इच्छाशक्ति भी समाहित होनी चाहिए क्योंकि सशक्त इच्छाशक्ति का अभाव भ्रष्टाचार का एक बहुत बड़ा कारण है।

इसलिए यदि भारत में भ्रष्टाचार के स्तर में कुछ परिवर्तन लाना है तो न्यायालयों को भ्रष्टाचार के मामलों में कुछ और अधिक शक्तियां प्रदान की जानी चाहिए। ऐसे मामलों में कानून एवं प्रशासन को बिना किसी राजनीतिक दबाव के अपने तरीके से काम करने देना चाहिए।

एनजीओ एवं मीडिया को जनता के भ्रष्टाचार की बुराइयों के संबंध में जागरूक बनाना चाहिए। सभी कार्यों एवं समझौतों में और पारदर्शिता लानी चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को भ्रष्टाचार से अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभावों एवं परिणामों के बारे में अवगत करवाना चाहिए। दोषी लोगों को दंड देकर कुछ निवारक कदम उठाये जाने चाहिए।

भारत एक विकसित देश है। हालांकि यह सत्य है कि विकास की दृष्टि से हम तीसरी दुनिया के देशों से आगे है और यह भी सत्य है कि हमें विकसित देशों की श्रेणी में शामिल होने के लिए अभी लम्बा रास्ता तय करना है। हमारा देश राजनेताओं एवं नेताओं द्वारा किए जाने वाले भ्रष्टाचार के प्रति काफी संवेदनशील है और 2G scam कांड इसका ज्वलंत उदाहरण है। इसलिए नए भारत के निर्माण के लिए भ्रष्टाचार उन्मूलन करना आवश्यक है।

अन्त में उपरोक्त तर्कों के सारांश में यही कहा जा सकता है कि सभी चीजों की शुरूआत खुद से होती है जिस प्रकार छोटी छोटी बुंदों से महासागर बनता है। यदि प्रत्येक व्यक्ति को भ्रष्टाचार के बारे में जागरूक किया जाए व समझाया जाए कि भ्रष्टाचार ना करें तब धीरे-धीरे परन्तु पक्का हम लोग भ्रष्टाचार मुक्त एवं उत्तम समाज के निर्माण की ओर बढ़ सकेंगे।

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस नागालैण्ड में

❑ जगदम्बा मल्ल
से.नि. पर्यवेक्षक
प्रधान महालेखाकार का कार्यालय
नागालैण्ड

द्वितीय विश्व युद्ध दुनियां के कई स्थानों पर लड़ा जा रहा था। नागालैण्ड की राजधानी कोहिमा एक प्रमुख रणक्षेत्र था जहां नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की आजाद हिंद फौज ने अंग्रेजों के छक्के छुड़ा रही थी। नेताजी स्वयं यहां ठहर कर युद्ध का संचालन कर रहे थे किन्तु इतिहास से यह अध्याय विलुप्त है।

इंजिनियर डॉ. वेलो स्वूरो (Er. Dr. Vekho Swuro) ने Netaji with Naga's Last Camp in India नामक एक पुस्तक लिखी है तथा इसी नाम से एक वृत्तचित्र तथा सीडी बनाया है। इंजिनियर वेखो स्वूरो लिखते हैं - नागालैण्ड के अन्दर छाजोबा (Chajuba) नामक गाँव में जो लड़ाई हुई उसे गाँव वाले अभी भी जापान रीबा (Japan Riba) नाम से संबोधित करते हैं, ट्वेन्सांग (Tuensang) के पांसा (Pansa) गाँव में जो लड़ाई हुई उसे पांसा युद्ध (Battle of Pansha) के नाम से जाना जाता है, रुझाजो (Ruzazho) गाँव में आजाद हिंद फौज (Indian National Army-INA) के शिविर पर अंग्रेजों ने बम गिराया था इसकी कहानी गाँव के बुजुर्ग अभी भी सुनाते हैं। अंग्रेजों के भय से गाँव वालों ने यह कहानी उन्हें बताई। आजादी के बाद NNE इस कहानी को विलुप्त कर देना चाहता था। इस लिए आजाद भारत में भी स्वतंत्रता संग्राम की यह गाथा उजागार नहीं हो पाया।

कोहिमा-संग्राम (Battle of Kohima)

15 अगस्त 1944 को जापानी सेना के साथ सुभाष बाबू की आजाद हिन्द फौज (Indian National Army-INA) ने U- Go - तुम जाओ आपरेशन शुरू किया। चिन्दविन नदी (Chindwin River) पार कर इम्फाल व कोहिमा होते हुए दिल्ली

की ओर कूच किए। 15 मार्च 1944 को चिन्दविन नदी पार कर चुके थे और नागा हिल्स पार करते हुए डीमापुर रेलवे स्टेशन पहुंचने की योजना बनाई थी जहाँ से असम को पार करते हुए 'दिल्ली चलो' अभियान पर आगे बढ़ने वाले थे। नागा ब्रिटिश लेबर कमान्डर - विकेन्यू नागा (Vikenyu Naga) ने बताया कि एक नागा व्यक्ति ने अंग्रेजों के एक नक्शे (Map) को चुराकर जापानी सेना के अधिकारियों को दे दिया जिसमें इस क्षेत्र के गाँवों के नाम, पर्वतों, नदियों के नाम तथा रास्ते को दर्शाया गया था। इस नक्शे से जापानी सेना तथा आजाद हिन्द फौज के संयुक्त युद्ध को काफी मदद मिली। यह नक्शा हाथ लग जाने के बाद जापानी सैनिक अधिकारी कुछ नागा प्रमुखों से संपर्क बनाना चाहते थे जो म्यांमार से कोहिमा तक पहुंचने में मदद कर सकते थे।

जापानी सेना के अधिकारियों ने ए. जेड. फीजो तथा उसके छोटे भाई केवीयाले को वार्ता के लिए बुलाया। इसी बैठक में जापानी सैन्य अधिकारियों ने फीजो से सुभाष बाबू का परिचय कराया। इस प्रकार जापानी सेना, आजाद हिन्द फौज तथा फीजो के नेतृत्व में नागा समूह का एक गठबन्धन तैयार किया गया। इस नक्शे के प्राप्त होने तथा फीजो का साथ मिल जाने से जापानी सैनिकों को विश्वास हो गया कि अब अंग्रेजों द्वारा मार्ग में स्थापित Inspection Bungalow की मदद से वे म्यांमार से कोहिमा पहुंच सकेंगे।

अपने दो सैन्य जनरलों-मुतागुची (15 डिवीजन, इम्फाल सेक्टर - Mutaguchi-15 Division, Imphal Sector) तथा जनरल कोतोकू सातो (General Kotoku Sato) 31 डिवीजन और आजाद हिन्द फौज (INA) के जनरल शाह नवाज खान के साथ जापानी सेना चिन्दविन नदी (Chindwin River) पार कर गये। होमालिन (Homalin) शहर से जनरल सातो (General Sato) के तीन इन्फैन्ट्री रेजिमेन्ट, माउन्टेन आर्टीलरी तथा समर्थन सेना (Support Unit) एक निर्धारित स्थान पर मिले। जनरल सातो ने इन्फैन्ट्री की टुकड़ी के साथ मियाजाकी (Miyazaki) को मणिपुर के उखुरुल (Ukhurul) गाँव की ओर भेजा और सैन्य गोदाम पर कब्जा करने तथा कोहिमा सड़क को अवरुद्ध करने का आदेश दिया ताकि अंग्रेजी सेना आगे न बढ़ सके। 58वीं रेजिमेन्ट का दूसरी बटालियन को सोमरा क्षेत्र (Somra Traet) के जंगलों को पार करते हुए उत्तर की ओर भेजा गया। जनरल सातो (General Sato) उखुरूल जिले के खरासम (Kharasom) गाँव होते हुए मध्यमार्ग पर आगे बढ़े।

आजाद हिन्द फौज के सैन्य प्रमुख सुभाष चन्द बोस अंग्रेजों द्वारा बनाये गये कच्चे मार्ग से खरासम (Kharasom) से आगे जेसामी (Jessami) होते हुए नागा हिल्स की ओर बढ़े। जनरल मुतागुची (General Mutaguchi) की 15वीं डिवीजन इम्फाल की ओर बढ़ी और 31वीं डिवीजन उखुरूल (Ukhurul), खरासम (Kharasom) होते हुए जेसामी (Jessami) की ओर बढ़ी। 28 मार्च 1944 को ये जेसामी पहुंच गये। यहाँ से ये तीन दिशा से प्रवेश करके अंग्रेजों के रेजीमेन्ट (1st Assam Regiment) के ब्रिटिश एलाएड फोर्स (British Allied Force) को प्रातः काल ही आक्रमण कर दिए और 1 अप्रैल 1944 को आजाद हिन्द फौज (Imdian National Army-INA) तथा जापानी सेना ने अंग्रेजों के जेसामी (Jessami) शिविर को परास्त कर अपने कब्जे में ले लिया।

जापानी सेना के जनरल सातो तथा INA के जनरल शाहनबाज खान उत्तर दिशा की ओर बढ़े और अंग्रेजों द्वारा बनाये गये बर्मा-कोहिमा सड़क पर जेसामी (Jessami), चिजामी बंगला (Chizami IB), मेसुलुमी (Mesulumi), फुत्सेरोमी (Phutseromi), किक्रीमा (Kikrima), चकबामा (Chakabama) और केदिमा (Kedima) होते हुए कोहिमा पहुंचने का लक्ष्य किए। कुछ सैनिकों ने लेक्रोमी (Lekromi), जापामी (Japami), लासुमी (Lasumi), लेसेमी (Leshemi), खेजाकेनो (Khezakeno), तादुबी (Tadubi) और खुजामा

(Khuzama) का मार्ग पकड़ा। लगभग एक हजार सैनिकों की टुकड़ी थेचुमी (Thechumi), सुफेमा (Tsupfema) तथा कापामेदजू (Kapamedzu) पहाड़ (7970 फुट) का मार्ग अपनाया। अन्य काफी सैनिक फैल कर अलग-अलग समूहों में लोसामी (Losami), खोमी (Khomi), फोलामी (Pholami), साक्राबा (Sakraba), गीदेमी (Gidemi), पूर्बा (Porba) और फुत्सेरो (Pgutsero) गाँवों में अपना स्थान बना लिए।

आजाद हिन्द फौज (INA), जापान सेना तथा जेसामी में पकड़ी गई अंग्रेजों की एलाएड सेना (Allied Forced) के प्रथम रेजिमेन्ट के साथ सुभाष चन्द्र बोस पूर्वी मार्ग से लोजाफुहु (Lozaphuhu), फेक निरीक्षण बंगला (Phek Inspection Bunglow), खुजा (Khuza), मुत्साले (Mutsale) और रूजाझो (Ruzazho) गांवों में पहुंचे। वहां से सुथोजू (Suthozu), योरूबा (Yoruba), छाजोबा (Chozaba), चेसेजु (Chesezu), थेनीजू (Thenyizu), चकबामा (Chakabama) और कोहिमा पहुंचे। चिन्दविन नदी से कोहिमा पहुंचने का यह सबसे अच्छा मार्ग है। कुछ सैनिक के. बासा (K. Basa), के बावे (K. Bawe), फेसाचोदू (Phesachodu) और कीक्रिमा (Kikrima) की ओर गये। कुछ सैनिक फुगी (Phugi), थुरुसुसु ग्राम शिविर (Thurususu Village Camp), खुसामी (Khutsami) और जूल्हा (Dzulha) गाँव की ओर गये। कुछ सैनिक केत्सापो (Ketsapo), थेवोपिसु (Thecopisu) तथा रूंगूजू (Runguzu) होते हुए कोहिमा की ओर बढ़े। कुछ सैनिक चेपोकेता (Chepoketa) निरीक्षण बँगला तथा सताखा (Satakha) निरीक्षण बँगला होते हुए कोहिमा के उत्तर-पूर्व दिशा में आगे बढ़े। कुछ सैनिक चिन्दविन नदी से सीधे जोनोबोतो (Zunheboto) तथा ट्वेनसांग (Tuensang) की ओर बढ़े। काफी सैनिक लोसामी (Losami), खोमी (Khomi), फोलामी (Pholami), साक्राबा (Sakraba), गीदेमी (Gidemi) और पूर्बा (Poruba), फुत्सेरो (Pfutsero), कापोमेद्जू (Kapamedzu) पर्वतों (7970 फुट) पर फैल गये।

सुभाष चन्द्र बोस नागालैण्ड में :-

सुभाष चन्द्र बोस अपनी सेना के साथ अप्रैल-मई1944 को रुजाझो (Ruzazho) गाँव में ठहरे थे। इन्होंने इस गाँव के पोसुई स्वूरो (Poswuyi Swuro) को प्रधान दोबासी तथा इनके बड़े भाई वेसुई स्वूरो (Vesuyi Swuro) को हिन्दी दोभाषिया नियुक्त किया। दस अन्य ग्रामीणों को घोड़ों के लिए चारा जुटाने के काम हेतु नियुक्तियाँ की। गाँववाले खुशी से सुभाष बाबू व INA की सब प्रकार मदद किए।

पोसुई (Poswuyi) और उनके भाई वेसुई (Vesuyi) को दायित्व दिया गया कि वे आजाद हिन्द फौज (INA) तथा उसके सहयोगी दल को जुल्हा (Dzulha) और किलोमी (Kilomi) गाँव होते हुए सताखा (Satakha) पहुँचने में मदद करे। इस प्रकार ये दोनों चाखेसांग बन्धु INA को लेकर सताखा पहुँचे और वहीं रात्रि विश्राम किए। दो सप्ताह रहने के बाद नेताजी सुभाष चन्द्र बोस 30 अप्रैल 1944 को गाँव छोड़े। यहाँ जोनोबोतो में अंग्रेजी सेना मौजुद थी। यहाँ INA के साथ उनका संघर्ष हुआ। पोसुई और वेसुई दोनों भाई एक गाँव से दूसरे गाँव होते हुए अपने गाँव रुझाजो पहुँत गये।

कोहिमा युद्ध का वर्णन करते समय इतिहास कार राबर्ट लीमैन (Robert Lymen) ने जोर देकर कहा - "Great things were at staka in a war with the toughast enemy any British army has had to foght." अगर सबसे शक्तिशाली शत्रु-सेना के साथ अंग्रेजों की कहीं लड़ाई हुई तो वह कोहिमा व इम्फाल की लड़ाई थी जहाँ अंग्रेजों की प्रतिष्ठा दाँव पर लगी थी। राबर्ट लीमैन ने कोहिमा व इम्फाल के युद्ध को Midway (मिड-वे), El Alamain (अल अलामीन) और Stalingrad (स्टैलिन ग्राड) में लड़े गये द्वितीय विश्व युद्ध के युद्धों के बराबर की लड़ाई के रूप में वर्णन किया।

जेलियांग जनजाति और इसकी सामाजिक संरचना

❑ थुन्बुई
पीएच.डी. हिंदी (शोधार्थी)
नागालैंड विश्वविद्यालय, कोहिमा
संपर्क संख्या : 9402993511

जेलियांग पूर्वोत्तर भारत की एक प्रमुख नागा जनजाति है और वर्तमान में असम, मणिपुर तथा नागालैंड के संलग्न जिलों में निवास करती है। ऐसा माना जाता है कि हजारों वर्ष पूर्व नागा जनजातियाँ किसी अंजान जगह से प्रवजित होकर मखेल (मणिपुर) आये थे और यहीं से पुनः अपने-अपने वर्तमान क्षेत्र की ओर फैलते चले गए। जेलियांगरोंग समुदाय के बारे में भी यही कहा जाता है कि मखेल से निकलकर रामतिंग कबिन, चेवांग फुंगनिंग और मकुइल्वांग्दी होते हुए अपने वर्तमान क्षेत्र में आये थे। यह भी कहा जाता है कि यहीं से जेलियांगरोंग संस्कृति का बीजवपन हुआ था। यहीं से जेमै, लियांग्मै और रोंगमै अपनी-अपनी कुछ विशिष्टताओं के साथ अलग-अलग स्थानों की ओर चले गये। परन्तु प्रवजन की यह प्रक्रिया अचानक या तेजी से न होकर धीरे-धीरे हुई थी। इस संदर्भ में प्रो. गांग्मुमई कामै लिखते है- "It must have taken centuries for the ancestors of the Nagas including the Zeliangrong people to move down from..... and then moving into their present habitat." सम्प्रति यह पेरेन (नागालैण्ड), एन.सी.हिल्स (अब डिमा हसौ, असम) तथा तमेंगलोंग एवं सेनापति (मणिपुर) जिला में निवास करते है।

वस्तुतः जेलियांग शब्द दो शब्दों का संयुक्त रूप है, जो उसकी उपजातियों - जेमै तथा लियांग्मै से बना है। यह संयुक्त नाम इनके लिए इसलिये प्रयोग किया जाता है, क्योंकि इनके उद्‌भव ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, भाषास्वरूप, सामाजिक संरचना एवं सांस्कृतिक परम्पराओं में समानता पाये जाते है। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि ये उपजातियाँ स्वयं एक मातृकुल से उत्पन्न भाई मानते है। यहीं कारण है कि इनमें आज भी अन्य नागा जातियों की अपेक्षा परस्पर अपनत्व की भावना अधिक पायी जाती है। इसके अतिरिक्त इसके पारंपरिक त्योहार, सामाजिक संस्कार एवं जीवनशैली में भी असमान्य साम्यता पाये जाते है।

जनसंख्या की दृष्टि से एक बड़ी जनजाति होते हुए भी इनका दुर्भाग्य यह रहा कि स्वतंत्र भारत में इन्हें असम, मणिपुर और नागालैण्ड तीन प्रांतों में विभाजित कर दिया गया। नागालैण्ड के सिवाय अन्य दो प्रान्तों में "जेलियांग" जनजाति के नाम से उन्हें मान्यता नहीं दी गई। भारतीय संघ की अनुसूचित जनजाति की सूची में नागालैण्ड में रहनेवाले

जेमै एवं लियांगमै लोगों का "जेलियांग" मणिपुर में कचा नागा, असम के एन.सी. हिल्स में रहनेवाले लोगों को "जेमे" के नाम से मान्यता देकर उन्हें छोटे छोटे समुदाय में विभाजित कर दिया गया। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की सेनानी पद्मभूषण रानी गाईदिन्ल्यु ने स्वतंत्र्योत्तर भारत में "जेलियांगरोंग होमलैंड" के रूप में इनके लिये एक अलग राज्य की मांग की थी, परन्तु राजनैतिक इच्छाशक्ति की कमी के कारण केन्द्रीय सरकार की ओर से कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया और आजतक सांस्कृतिक विरासत की दृष्टि से एक होते हुये भी यह जनजाति भारत के तीन प्रान्त में अलग-अलग नामों से बिख़री हुई है।

जेलियांग नागाओं में चिरकाल से कुछ महत्वपूर्ण सामाजिक, धार्मिक एवं राजनैतिक संस्थाएं विद्यमान रही हैं, जो समय के प्रवाह के साथ-साथ कुछ तो धूमिल सी हो गयी हैं, पर आज भी कुछ ऐसे तत्व हैं जो समाज में अपनी जीवंतता के साथ शाश्वत हैं। इस सन्दर्भ में बात करते समय हमें यह भी ध्यान में रखना होगा कि इस जनजाति के सामाजिक स्वरूप का सबसे बड़ा एवं स्वतंत्र इकाई गाँव है। भारतीय लोकतान्त्रिक प्रशासन के अंतर्गत आने के पूर्व तक एक प्रकार से प्रत्येक गाँव एक कबीला की तरह ही अपने अस्तित्व में था। भूमि-स्वामित्व, ग्रामीण प्रशासनिक व्यवस्था, कृषि क्षेत्र जैसे विषयों मे हर ग्राम की संप्रभुता रही है। इस सन्दर्भ में William Mc Culloch का कथन उदाहरणीय है- "Their world view was confined to the village which was a Geographical entity with social, cultural and political parameters". आज भी न्यायिक मामले एवं कुछ सरकारी परियोजनाओं के अतिरिक्त स्थिति यथावत बनी हुई है। अतः जब समाज के विभिन्न संस्थाओं की बात की जाती है तब उन्हें एक गाँव के अन्तर्गत ही देखा जाना चाहिए। इनमें से प्रमुख आयाम निम्न रहे है। जो अब भी कुछ एक गाँवों में विद्यमान है :-

इनमें से प्रमुख आयाम निम्न रहे हैं जो अब भी कुछेक गांवों में विद्यामान हैं :-

1) परिवार
2) किखुन/किदुई (कुल)
3) खंग्च्यु (हंग्सेऊ)
4) ल्युच्यु (लेउसेऊ)
5) चेहुत (हेगुत)
6) सिन्कू (तिन्कू) प्रणाली
7) चेवांग (हेग्वांग) परम्परा

1) परिवार :-

जेलियांग समाज में भी परिवार सबसे छोटी तथा महत्वपूर्ण ईकाई है। इस समाज में पितृ-सत्तात्मक तथा एकल परिवार की परम्परा रही है। इस सन्दर्भ में यह उद्धरणीय है - "Generally, most of the families in (Zeliang Society) consisted of husband and wife, their unmarried and minor children." इस परम्परा के पीछे, यह एक कारण हो सकता है कि यहाँ के लोग गांवों में छोटे छोटे तथा अस्थायी घरों पर ही निर्भर रहे हैं। गृह निर्माण लकड़िया तथा एक विशेष प्रकार का घास, जिसे स्थानीय भाषा में 'खेर' (छप्पर) कहा जाता है। यही कारण है कि इन घरों को अधिक से अधिक पन्द्रह वर्षों तक ही रखा जा सकता है। दस से पन्द्रह वर्षों के बाद पुनः घर का निर्माण किया जाता है। एकल परिवार की परम्परा के पीछे एक कारण यह भी हो सकता है कि सास एवं बहुओं के बीच किसी प्रकार की अनबन न हो। क्योंकि एक छत के नीचे न रहने पर गृह प्रबंधन सम्बंधी किसी प्रकार के टकराव की संभावना नहीं रह जाती है।

पितृ-सत्तात्मक परिवार की परम्परा तथा परिवार के महत्वपूर्ण विषयों के निर्णय घर के मुखिया अर्थात पिता की अनुमति के बिना न लेते हुए भी माँ एवं अन्य सदस्यों की भागीदारी परिवार में महत्वपूर्ण रहती है कृषि कार्य में माता-

पिता के साथ-साथ बच्चों की भी भागीदारी समान रूप से रहती है। यद्यपि आज शिक्षा की खोज में बच्चे एवं नजवानों की इनमें भागीदारी कम हो गयी है, फिर भी गाँवों में रहने वाले युवक-युवतियाँ आज भी कृषि संबंधित कार्य में समान रूप से भाग लेते है। झूम कृषि के लिए घने जंगलों को काटना तथा उसे जालने के बाद बड़े बड़े लट्ठों को हटाने जैसे भारी शारीरिक कार्यों के सिवाय, अनाज-बीजों की बोआई से लेकर फसल की कटाई तथा अन्न संग्रह करने तक के भी कार्यों में स्त्री-पुरूष समान रूप से भाग लेते हैं। जब कृषि कार्य में सबसे अधिक व्यस्तता रहती है, तब परिवार के छोटे छोटे बच्चे तथा उनकी देख-रेख के लिए किसी एक बुजुर्ग को छोड़कर सभी लोग खेतों की ओर जाते है। त्यौहार एवं शीत के दो महीनों को छोड़कर समाज के लोग वर्ष भर कृषि कार्य में व्यस्त रहते है। कभी-कभी तो नये परिवार के लिये कृषि कार्य तथा बच्चों की देख-रेख एक समस्या बन जाती है। नया परिवार अर्थात जब एक पुत्र के विवाह के उपरांत दो या तीन बच्चे हो जाते है तब पितृ परिवार से अलग नये घर का निर्माण कर उसे एक नया परिवार बनाना पड़ता है। ऐसे में जब हर परिवार कृषि कार्य में व्यस्त रहता है तब बच्चों की देख-रेख के लिए पिता या माँ को घर में रहना पड़ता है और पाँच लोगों के पेट के लिए एक ही व्यक्ति काम कर पाता है। नये परिवार के लिये यह सबसे बड़ी विकट स्थिति रहती है। ऐसे स्थिति में ग्राम समाज एक वैकल्पिक व्यवस्था भी करता है। जिन परिवारों में छोटे छोटे बच्चे ही होते है और माता-पिता को कृषि कार्य में लगना होता है, ऐसे परिवारों के बच्चों की देख-रेख का दायित्व गाँव की किसी बुजुर्ग महिला को दे दिया जाता है, जिससे उस परिवार के कृषि कार्य में बाधा न पड़े। इस प्रकार यह देखा जाता है कि जहाँ एक परिवार छोटा इकाई है वहीं पूरा गाँव कभी-कभी एक परिवार की तरह दिखने लगता है।

2) किखुन/किदुई (कुल/घराना) :-

परिवार से कुछ विस्तृत, परन्तु एक गाँव के अन्तर्गत कई किखुन/किदुई हुआ करते है, जिन्हें कुल या खानदान भी कहा जा सकता है। प्रत्येक किखुन एक पितृ वंशावली से उत्पन्न माना जाता है और इनमें अंतर्विवाह भी वर्जित है। इस सन्दर्भ में यह उद्धरणीय है कि - 'Any clan could be traced back to a single family, which had multiplied into numerous families but stayed connected to each other." जब किखुन या किदुई की बात की जाती है तब यह भी ध्यातब्य है कि जेलियांग जनजाति में दो मुख्य कुलों की बात की जाती है, जिन्हें न्यूमै एवं पामै के नाम से अभिहित किया जाता है। सामाजिक प्रतिष्ठा की दृष्टि से इन दोनों कुलों में किसी प्रकार का अंतर नहीं किया जाता है। जैसे कि "सोशल स्ट्रक्चर ऑफ जेलियांगरोंग सोसाईटी" में लिखा है- "Though the Zeliangrong Society is based on clan hood and kinship, it has no class or artificial distinction among the members of the society." परन्तु व्यवहारिक रूप में यह देखा जाता है कि किसी गाँव में जिस कुल की जनसंख्या अधिक होती है, उनका दबदबा अधिक रहता है। न्यूमै एवं पामै एक ग्राम सीमा से बंधा हुआ न होकर सम्पूर्ण जेलियांग जनजाति में व्याप्त है, परन्तु ग्राम विशेष में इन्हीं के कई किखुन हो जाया करते हैं। इससे यह स्पष्ट है कि समाज में लोग अपने पितृ-वंश की पीढ़ियों को जहाँ तक स्मरण रख पाते हैं, उस सीमा के अंतर्गत आनेवाले लोगों को अपने किखुन के अंतर्गत मान लेते हैं। संपूर्ण ग्राम-भूमि में प्रत्येक किखुन का निश्चित भू-भाग होता है, जिन पर केवल कृषि-कार्यों की दृष्टि से उन्हीं का अधिकार होता था, मगर कालांतर के साथ अब लोगों ने प्राकृतिक संसाधनों पर भी आधिपत्य जमा लिया है। कतिपय गांवों में एक किखुन किसी एक कॉलोनी में ही रहकर उप-ग्राम का रूप बना लेते

हैं, परन्तु अधिकांश में यह वृत्ति नहीं पाई जाती। ये किसी भी सामाजिक, धार्मिक या सांस्कृतिक अनुष्ठान या उत्सवों पर अन्य किखुन सदस्यों की अपेक्षा अपने कुल-परिवारों के साथ अधिक निकटता से जुड़े देखे जाते हैं। इस प्रकार एकल परिवार की परंपरा में भी एक किखुन को वृहद्-परिवार के रूप में देखा जा सकता है।

3) खंग्च्यु (हंग्सेऊ) :-

खंग्च्यु (हंग्सेऊ) एवं ल्युच्यु (लेउसेऊ), जेलियांग समाज की ऐसी दो सामाजिक संस्थाएं रही हैं, जो समाज के युवक-युवतियों में जीवन के मूल्य संचारित करते आये हैं। यद्यपि आज धर्म-परिवर्तन एवं तथाकथित आधुनिकता ने इन संस्थाओं को मृत-प्राय सा बना दिया है, फिर भी जहां सनातन अथवा पारंपरिक पैतृक धर्म के पालन करने वाले लोग अर्थात पारंपरिक जनजातीय आस्था के अनुयायी हैं, वहाँ ये संस्थाएं आज भी जीवंत हैं। ये संस्थाएं युवकों एवं युवतियों के शिक्षण-प्रशिक्षण के केन्द्र माने जाते हैं। खंग्च्यु अर्थात युवकों के लिए वह स्थान, जहां गाँव के सभी अविवाहित युवक अपनी रात बिताते हैं, उसी प्रकार ल्युच्यु युवतियों के लिए सोने का स्थान हुआ करता है। आज सामान्य भाषा में इसे "मोरुंग" के नाम से जाना जाता है।

प्रत्येक गाँव में प्रायः दो या अधिक खंग्च्यु हुआ करते हैं। खंग्च्युकी अर्थात युवकों का घर, जिसमें दिनभर के अपने घर एवं कृषि के कार्यों से निपटने के बाद रात्रि भोजन के पश्चात सोने तथा सामाजिक एवं धार्मिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए एकत्र होते हैं, इसलिए यह घर मात्र सोने के लिए नहीं होता, बल्कि इसकी अपनी कई परम्पराएं और विशेषताएं होती हैं। "जेलियांगरोग : सोशल स्ट्रक्चर" के अनुसार- "Khangchiu is one common and very important socio-cultural and political institution of the Zeliangrong. It provide as a communal sleeping hall for the boys and other members of the dormitory." इस तथ्य के आधार पर यह कहा जा सकता है कि केवल अविवाहित युवक ही नहीं बल्कि विवाहित पुरूष भी खंग्च्यु सदस्य होते हैं तथा वे भी अपने मोरुंग में सोते हैं। सामान्य रूप से जब युवकजन रात्रि भोजन के पश्चात हंग्सेऊ में आते हैं, तब वहां यजमान (खंग्च्यु घर मालिक) या कोई दो-तीन बुजुर्ग अपने मधु (मादक पेय) के प्याले लिए बैठे रहते हैं। सभी युवकजन उनसे सामाजिक रीति-रिवाजों एवं परम्पराओं से सम्बंधित ज्ञान प्राप्त करते हैं, पौराणिक तथा लोक-कथाएं सुनते हैं। लोकगीत सुन-सुनकर याद करते हैं। गीत ही क्यों, सभी प्रकार के मनुष्योचित व्यवहारिक ज्ञान, मौखिक आधार पर ही सुनकर प्राप्त करते हैं। ये ज्ञान, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परम्पराएं इसी हंग्सेऊ के माध्यम से पीढ़ी दर पीढ़ी चली आती हैं क्योंकि जेलियांग समाज में आज से चालीस-पचास वर्ष पूर्व तक लिखने एवं पढ़ने तथा अपने ज्ञान को पोथियों में संरक्षित करने की परम्परा नहीं रही है। इससे यह भी स्पष्ट है कि समाज के युवकों की स्मरण-क्षमता बड़ी तीक्ष्ण रही है। प्रो. गांग्मुमई कामै लिखते हैं- "The past story of Zeliangrong people is narrated in their rich folklore, myths and legends, songs and ballads, religious hymns and oral traditions handed down from generation to generation." जब हंग्सेऊ या युवक-मोरुंग की बात की जाती है, तब यह एक अपेक्षाकृत बड़े घर में होता हैं, जिसमें प्रायः दो प्रवेश-द्वार होते हैं। मुख्य द्वार से प्रवेश करते ही एक तरफ दस-बीस लोगों के सोने के लिए एक लम्बे तख्ते का बिस्तर होता है तथा उसके बगल में अग्नि का स्थान रहता है, जिसके चारों ओर बैठने के लिये तख्ते लगे होते हैं। रात को इसी अग्नि के चारों ओर बैठकर युवक-जन बुजुर्गों से ज्ञान प्राप्त करते हैं। युवकों के लिए यह स्थान प्रवेशद्वार की ओर से घर के पहले कमरे में होता है। इसके भीतर घुसने पर दूसरा कमरा यजमान का रसोई होता

है तथा इसके और भीतर तीसरा कमरा यजमान तथा उसके परिवार का शयन कक्ष होता है।

इन बातों के अतिरिक्त खंग्च्यु के प्रबंधन एवं सम्बन्धी कुछ अन्य और भी बातें हैं, जो बड़े ही दिलचस्प हैं। जब युवक-जन कृषि कार्य में व्यस्त नहीं रहते हैं या ऐसे युवक जिनके घर कृषि कार्य के लिए अन्य लोग पर्याप्त होते हैं, वे शाम के समय लगभग हर रोज जंगल से लकड़ियाँ लाते हैं, जिससे उन्हें बुजुर्गों के साथ बैठते रात, अंधेरे में गुजारना न पड़े। हंग्सेऊ अर्थात पुरुष मोरुंग में, विशेष रूप से अग्नि स्थान के चारों ओर लगे तख्तों पर प्रायः महिलाओं का बैठना वर्जित होता है। इसके पीछे यह माना जाता है कि यदि उन पर महिलायें बैठती हैं, तब मोरुंग के सभी युवकों के लिए शिकार तथा युद्ध की दृष्टि से अशुभ होता है। इसके साथ ही मोरुंग परिचालन की यह भी परम्परा रही है कि जब भी कोई सदस्य किसी जानवर का शिकार करता है, तब उस जानवर के सर, हृदय और गुर्दे मोरुंग में लाये जाते हैं, तथा उसे पका कर सभी सदस्यों को दावत दी जाती है। यदि जानवर छोटा हुआ तो भी उसे पका कर सब को चखाया जाता है। इसके पीछे यह धारणा है कि इसे खाने वाले व्यक्ति के लिए भविष्य में शिकार की दृष्टि से शुभ होता है। इसके साथ ही खंग्च्यु में बने जानवर के सिर का पकवान महिलाओं के लिए पूर्णतः वर्जित है।

हंग्सेऊ से जुड़ी बातों में शिकार-पूजा (तथ्युलेंग/हेतेउले), त्योहारों में पारंपरिक खेलों में भागीदारी तथा किसी विशेष आयोजन पर मिथुन को पकड़ने की प्रतियोगिता आदि बातें भी आती हैं। तथ्युलेंग खंग्च्यु में एक प्रकार का आयोजन होता है, जो प्रायः वर्ष के प्रारंभ में किया जाता है। इसका आयोजन वर्ष भर सदस्यों के लिए शिकार की दृष्टि से अच्छा हो और अधिक से अधिक जानवरों के सिर मोरुंग में आएं, इस हेतु किया जाता है। इस दिन पिछले वर्ष के जानवरों की सभी खोपड़ियों को मोरुंग में एक पंक्ति में छत से या दीवार के सहारे लटका दिया जाता है तथा नये खोपड़ियों को रखने के लिए अग्नि स्थान के ऊपर लगे खूंटी को खाली कर दिया जाता है। त्योहारों में आयोजित पारंपरिक खेल यद्यपि सामूहिक न होकर व्यक्तिक होते हैं, परन्तु अपने मोरुंग के यश के लिए सभी सदस्य अपने मोरुंग के खिलाड़ी को प्रोत्साहित करते हैं। जब कोई सदस्य खेल में जीतता है और उसे किसी जानवर का सिर या कुछ भी प्राप्त होता है, तब उसे वह घर नहीं ले जाता, बल्कि अपने हंग्सेऊ में ही लाकर सभी सदस्य उसका दावत उड़ाते हैं। मिथुन-पकड़ प्रतियोगिता एक प्रकार से सामूहिक क्रीड़ा है। इसका आयोजन किसी दीर्घ-जीवी व्यक्ति द्वारा अपने जीवन की उपलब्धियों को जताने की खुशी में मिथुन काटने या फिर किसी मृतक की संतानों के द्वारा अपने पितरों की स्मृति में बड़ा अनुष्ठान करने पर किया जाता है। यह इतना बड़ा जानवर होता है कि एक अकेला व्यक्ति उसे पकड़ कर गिरा नहीं सकता, ऐसे में सभी सदस्यगण उसे मिलकर पकड़ते हैं, ऐसे आयोजन बहुत ही बिरले होते हैं। इसमें एक बड़े से मिथुन को जंगल में खुला छोड़ दिया जाता है और गाँव में जितने भी हंग्सेऊ होते हैं, उनके सभी सदस्य उसे दौड़ा कर पकड़ते हैं। जिस हंग्सेऊ का सदस्य मिथुन की पूँछ या गर्दन को पहले पकड़ लेता है, उसके सभी सदस्य उसका साथ देकर मिथुन को गिराते हैं। यदि एक मोरुंग का सदस्य उसे पकड़ कर रखता है, तब दूसरे मोरुंग के सदस्य मिथुन को हाथ नहीं लगाते। कभी-कभी दो मोरुंग मिल कर भी उसे पकड़ते हैं और कभी-कभी इस चक्कर में दो मोरुंग के सदस्यों में झगड़े भी हो जाते हैं। मिथुन पकड़ कर गिराने वाले हंग्सेऊ को मिथुन के मांस का बड़ा भाग गाँव की परम्परानुसार यजमान की ओर से दिया जाता है, जिसका सदस्य गण दावत खाते हैं।

4). ल्युच्यु (लेउसेऊ) :-

जेलियांग नागा गाँवों में जितने पुरुष मोरुंग होते हैं, लगभग उतने ही युवती-मोरुंग अर्थात ल्युच्युकी भी होते हैं।

खंग्च्युकी के विपरीत प्रायः ल्युच्युकी में युवतियों के सोने का स्थान घर के सबसे भीतरी कमरे को रखा जाता है। इसके पीछे का कारण- युवतियों की सुरक्षा को माना जाता है। लेसेऊकी या हंग्सेऊकी विशेष प्रकार के घर होते हैं और गाँव के किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के परिवार को ही इनका यजमान बनाया जाता है। जब इनके गृह-निर्माण होते हैं, तब भी अन्य घरों से काफी बड़ा बनाने के कारण गाँव से अधिक से अधिक लोगों का सहयोग रहता है। यह यजमान का ही नहीं बल्कि संपूर्ण सदस्य-समाज का घर होता है क्योंकि सभी सदस्य युवक अथवा युवतियों के शयन का स्थान होता है।

जिस प्रकार हंग्सेऊ परिचालन की परम्पराएं हैं उसी प्रकार लेउसेऊ परिचालन की भी कुछ विशेष परम्पराएं होती हैं। दिनभर के कृषि कार्य से निपटकर युवतियां रात्रि-भोजन के पश्चात अपने-अपने लेउसेऊ में सोने के लिए जाती हैं। परन्तु यों ही जा कर सो नहीं जाती हैं, वे एक साथ बैठकर गपशप-चर्चाएं करती हैं। इन्हीं बैठकों में वे मोरुंग माँ अर्थात मालकिन से स्त्री-उचित जीवन-व्यवहार के ज्ञान भी प्राप्त करती हैं। मालकिन ही एक प्रकार से उन्हें शिक्षा देती है। इसके अतिरिक्त कुछ युवतियाँ अपने घरों से सूत कातने के लिए रुई लेकर आती हैं और दिनभर के कृषि कार्यों के बाद भी देर रात तक सूत कातने में व्यस्त रहती हैं। ल्युच्यु के सम्बन्ध में यह कथन उद्धहरणीय है- "Unlike the khangchiu, the category of membership of this dormitory (liuchiu) is only the unmarried girls." भले ही विवाहित महिलाएं ल्युच्यु की सदस्य न हों, फिर भी जिस प्रकार लेउसेकी में बुजुर्ग पुरूषों के आने तथा उन्हें गीत सुनाने तथा कहानियां बताने की परम्परा है उसी प्रकार लेउसेकी में भी बुजुर्ग महिलाएं आती हैं। जब कोई न आये तब मालकिन ही कहानियाँ सुनाती हैं।

लेउसेऊकी में युवकों के टहलते आने की परम्परा बडी ही दिलचस्प है। इस सन्दर्भ में William Mc Culloch का यह कथन उद्धहरणीय है- "Young women have their places of resort and between them and young men: intercourse is unlimited without leading to immorality which is the exception" जब अपने लेउसेकी में आग बुझाने लगती है, तब युवक-जन लेउलेकी में टहलने निकल पड़ते हैं। जब भी कोई युवक लेउसेऊकी में आता है, तब युवतियाँ बड़े आदर तथा सम्मान के साथ बैठने को स्थान देती है। आपस में हास-परिहास और बातचित करते हैं। कुछ युवतियाँ बड़ी खुली होती हैं, पर अधिकांश युवतियाँ उन युवकों के सामने घुंघट डाली, सिर नीचे किये सूत कॉटती रहती हैं। प्रायः युवकों के लिये यह पता लगाना कठिन हो जाता है कि अमुक युवती कौन है। ऐसी स्थिति में युवकजन युवतियों से गीतों में ही वार्ता करते हैं। एक दिलचस्प बात यह भी हैं कि यदि किसी युवती को आमुक युवक से गीत सुनने के लिये निवेदन करना होता था, तब उस युवक की ओर एक लाठी बढ़ाकर उसे पकड़ा दिया जाता था। यह एक परम्परा रही हैं कि युवतियाँ अपनी पहचान छुपाये रखने के लिये युवकों के सामने मूँह खोलती नहीं थी, मगर बड़ी चतुराई के साथ दंडा पकड़ा देती थी। इसके बाद उस युवक के सामने गीत सुनाने के अतिरिक्त कोई दूसरा उपाय न होता था। एक और रोमांचक बात यह है कि गाँव में लोग घर के पीछे गन्ने खुब लगाते हैं और ऐसा कहाँ जाता है कि जाड़े के दिनों में जब कृषि कार्य की व्यस्तता का बोझ न रहे तब युवकजन लोगों के घर से बगीछे में चुपके से घुस कर खूब गन्ने उखाड़ लेते थे और लेउसेऊकी में आ धमकते थे। देर रात तक युवक-युवतियां गन्ने का आनन्द लेते हुए अपना समय व्यतित करते थे। घुंघट में मुंह छुपाकर चुपचाप रहनेवाली युवतियाँ भी इस कार्य में बड़े उत्साह तथा निपुणता के साथ भाग लेती थी।

यह सब हास-परिहास एवं आनन्द उठाते हुये भी

युवतियाँ कभी भी अपने दायित्व से मुंह न मोड़ती थी। प्रातः जल्दी उठकर मालकिन के घर के लिये पानी उठा लेती फिर दुबारा जाकर अपनी घरों के लिये भी पानी लेती थी। इस प्रकार लेउसेऊकी, जो युवतियों के लिए एक शिक्षण संस्था हैं, वहीं दिनभर की कार्यों की थकान दूर करने तथा अपने हमउम्र के लोगों के साथ आनंद उठाने का भी एक माध्यम था।

5). चेहुत (हेगुत) :-

जेलियांग समाज में हेगुत या चेहुत कृषि कार्य की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण आयाम हैं। हेगुत का अर्थ है, युवकों एवं युवतियों का वह समूह जो बारी-बारी से एक-दूसरे के खेतों में जाकर काम करते हैं और कृषि कार्य व्यवस्था में भी एक-दूसरे का साथ देते हुए, जीवन-व्यापार को आगे बढ़ाते हैं। एक हेगुत प्रायः एक हंग्सेऊ एवं एक लेउसेऊ के सदस्य मिलकर बनाते हैं, परन्तु कभी-कभी अपनी संबंधि-सुविधानुसार अपने हंग्सेऊ अथवा लेउसेऊ से बाहर के लोगों के साथ भी मिलकर अपना समूह बना लिया जाता है, जिसमें एक बुजुर्ग या वरिष्ठ व्यक्ति का होना अनिवार्य माना जाता है। वरिष्ठ व्यक्ति के द्वारा हेगुत के तौर-तरीकों तथा कार्य का निदर्शन होता है और साथ ही किसी कार्य में गाये जाने वाले गीतों के प्रशिक्षण तथा अगुवाई के कार्य भी ये करते हैं। एक प्रकार से वह व्यक्ति उस समूह का अभिभावक होता है। वे यह भी तय करते हैं कि अमुक दिन किसके खेत में कार्य करने हेतु जाना होगा। यह एक ऐसी प्रणाली है, जिससे कृषि कार्य में अपेक्षाकृत कम क्षमता रखने वाले व्यक्ति के खेत में भी समान श्रम-क्षमता के साथ कार्य हो जाता है। अत सामाजिक सहयोग की दृष्टि से इसे अत्यधिक महत्व दिया जाता है। इसके माध्यम से परस्पर सहयोग के कार्य जंगलों की कटाई, उसे जलाकर साफ करने, बीज लगाने, निराई करने से लेकर फसल की कटाई तक निरंतर चलते रहते हैं। कभी-कभी यह चेहुत बिना किसी सदस्य परिवर्तन के वर्षों तक भी बना रहता है।

हेगुत का कार्य केवल कृषि कार्य में परस्पर सहयोग तक ही सीमित नहीं है। समूहों में रहने वाले सभी सदस्यों के खेत में कृषि कार्य हेतु जाने का एक चक्र पूरा करते ही वे दैनिक मजदूरी के आधार पर अन्य लोगों के खेतों में जाते हैं। किसी से रूपये लिए जाते हैं और किसी से पशु अथवा धान लिया जाता है। इन कार्यों से एकत्र धन का उपयोग फुर्सत के दिनों में सम्पूर्ण गाँव को दावते देने के काम में लाया जाता है। परन्तु इसमे केवल खाना-पीना न होकर एक प्रकार से इसे उत्सव के रूप में मनाया जाता है। वास्तव में इसे युवा-उत्सव कहा जा सकता है, क्योंकि यह ऐसा समय होता है जब गाँव के सभी युवक-युवतियाँ अपने पारंपरिक रंग-बिरंगे परिधान में सज-धजकर गीत-संगीत एवं नृत्य का आनंद उठाते हैं। गाँव में जितने भी चेहुत होते हैं, वे मिलकर तय करते हैं कि किन तिथियों को यह आयोजन किया जाए। प्रत्येक चेहुत का अपना-अपना यजमान होता है जिसे "पकेजीकी" कहा जाता है और प्रायः यह समूह में सबसे वरिष्ठ व्यक्ति का घर होता है। कभी-कभी यदि उस वरिष्ठ व्यक्ति की पारिवारिक स्थिति अच्छी न हो तो चेहुत के किसी ऐसे युवती के घर को यजमानी के लिए चुना जाता है, जिसके घर की आर्थिक स्थिति भी ठीक-ठाक हो और कार्यों में सहयोग हेतु उसकी और बहनें हों। कभी जब एक चेहुत अपने-अपने स्तर पर यह आयोजन करते हैं, तो ग्रामवासियों को भोज देने के अतिरिक्त ये परस्पर भी भोज्य वस्तुओं का आदान-प्रदान करते हैं। यह दावत ऐसे समय पर दिया जाता है, जब नए खेत में अनाज अथवा फल सब्जियों के आने में देर हो, जिसके कारण कुछ निर्धन परिवारों में खाने-पीने के लाले पड़े होते हैं। इस प्रकार के आयोजन से एक-दो दिन के लिए ही सही, खाद्यान्न की तंगी से जूझ रहे लोगों को भरपूर खाना मिल जाता है। इस प्रकार हेगुत, समाज के भूखे लोगों को भोजन प्रदान करके समाज-

कार्यों में भी अपनी भूमिका का निर्वहन करता है।

6). सिन्कू (तिन्कू) प्रणाली :-

जेलियांग नागा गाँवों में पुरोहित के रूप में कार्य करने वाले को सिन्कू या तिन्कू कहा जाता है और वे गाँव के सबसे आदरणीय व्यक्ति माने जाते हैं। प्रत्येक गाँव में एक मुख्य सिन्कू होता है और एक या दो सहायक होते हैं, जो पहले की अनुपस्थिति में घरों में अथवा गाँव के लिए पूजा-अनुष्ठान के कार्य सम्पादित करते हैं। अंग्रेजों के आने अथवा भारतीय प्रशासन के पूर्व तक किसी भी गाँव में ग्राम पंचायत की प्रणाली नहीं थी। ऐसे में वे ही मुखिया की तरह कार्य करते थे। सम्पूर्ण गाँव के लिए वहीं घोषणाएं करते थे और सूचनाएं भी उन्हीं के माध्यम से लोगों तक पहुँचती थीं। किसी भी कृषि-संबंधी कार्य को आरम्भ करना हो, किसी त्योहार की तिथि तय करनी हो या फिर त्योहारों का आरम्भ, इनकी घोषणा के बिना कुछ न होता था। इसलिए मुख्य सिन्कू हों या सहायक, अपना जीवन अत्यंत संयमित ढंग से जीते थे। सिन्कू प्रणाली के बारे में "डॉ.आर.ब्राउन अपने 'Account of Zeliangrongs', में लिखते हैं- "Each (Zeliangrong) village has a priest who directs the sacrifices and also acts as the physician, performing sacrifices and incantation for the recovery of the sick." इससे साफ है कि सिन्कू का काम केवल पूजा-अर्चना तक ही सीमित नहीं, बल्कि वे गाँव में बीमार व्यक्ति का इलाज भी करते थे।

मुख्य सिन्कू की मृत्यु के बाद उनके किसी एक सहायक को मुख्य सिन्कू बनाया जाता था। यह प्रणाली पिता से पुत्र को विरासत के रूप में नहीं बल्कि ग्राम समाज ही यह तय करता था कि अगला मुख्य सिन्कू कौन बनेगा।

इस प्रकार जेलियांग समाज में सिन्कू प्रणाली को बहुत अधिक महत्व दिया जाता है तथा आज भी सनातन-धर्मी गाँवों में इसका अनुपालन किया जाता है।

7). चेवांग/हेग्वांग (राजा) परम्परा :-

जेलियांग गाँवो में चेवांग की भी परम्परा रही है, परन्तु यह सिन्कू प्रणाली से पूर्व की है। किसी-किसी गाँव में तिन्कू प्रणाली एवं चेवांग या हेग्वांग की परम्परा समानांतर रूप से चलती रही। गाँवों में राजा होते थे, परन्तु उनका ग्रामीण जीवन-व्यापार में ज्यादा हस्तक्षेप नहीं होता था। प्रो. गांग्मुमई कामै लिखते हैं- "An elder who led the people in the migration and settlement at the new site was made the Chief." इससे स्पष्ट है कि एख स्थान से दूसरे स्थान की ओर प्रवर्जन के समय अथवा किसी ग्राम-भूमि की खोज के समय कोई एक व्यक्ति जन-समूह का नेतृत्व करता था और प्रायः गाँव की स्थापना का नेतृत्व करने वाला स्वतः ही वह उस गाँव का राजा कहलाता था। यह स्वाभाविक है कि किसी नए गाँव की स्थापना के लिए जमीन की खोज का नेतृत्व करने वाला व्यक्ति साहसी, पराक्रमी एवं नेतृत्व-कुशल होते होंगे, इसलिए उनके साथी उन्हें अपने राजा के रूप में स्वीकार कर लेते थे।

एक प्रकार से वही ग्राम के संपूर्ण भू-भाग का स्वामी होते थे और उनके बाद उनकी संतानों को यह अधिकार स्वतः प्राप्त हो जाता था। जब कोई व्यक्ति बाहर से आकर उस गाँव में रहने लगता था तब ग्राम संस्थापक अर्थात चेवांग की अनुमति से वह ग्राम-भूमि के किसी हिस्से का अधिग्रहण अपने लिए करता जो कालांतर में उसके किखुन का हो जाता। यद्यपि चेवांग सम्पूर्ण जमीन पर अपना आधिपत्य नहीं जमाता था, फिर भी सम्मान के तौर पर ग्रामीणजन उन्हें भेंट के रूप में प्रतिवर्ष अनाज देते थे। किसी-किसी गाँव में जब किसी को शिकार के रूप में जंगली जानवर मिलता, तो राजा को भेंट के रूप में उस जानवर की "टांग" दी जाती थी। यह परम्परा आज भी कहीं-कहीं विद्यमान है। जब कोई शिकारी

किसी बहुत बड़े जानवर को मार लेता या किसी हिंसक पशु-भालू, शेर आदि का शिकार करता था, तब वह उस पशु को सम्पूर्ण गाँव को समर्पित करता था। ऐसे में उस जानवर के शरीर को पूरे गाँव के लोग मिलकर उठाते तथा राजा के घर ले आ कर रखते थे और उसके मांस को सभी लोगों में बाँटा जाता था। ऐसी स्थिति में भी जानवर के सिर, हृदय एवं गुर्दे को शिकारी के हंग्सेऊकी में ही दिया जाता था।

इस प्रकार चेवांग की परम्परा जेलियांग समाज में रही है, भले ही वह एक निरंकुश शासक की तरह पेश न आता हो, फिर भी नाम के लिए ही सही राजा हुआ करते थे। परन्तु यदि ग्रामीणजन के बीच किसी प्रकार की लड़ाई, भूमि सम्बन्धी झगड़े या अन्य कारणों से किसी समस्या का हल नहीं निकलता, तब राजा ही इसका निर्णय करते थे, अर्थात न्याय प्रणाली प्रायः राजा के ही अधीन रहता था।

इति।

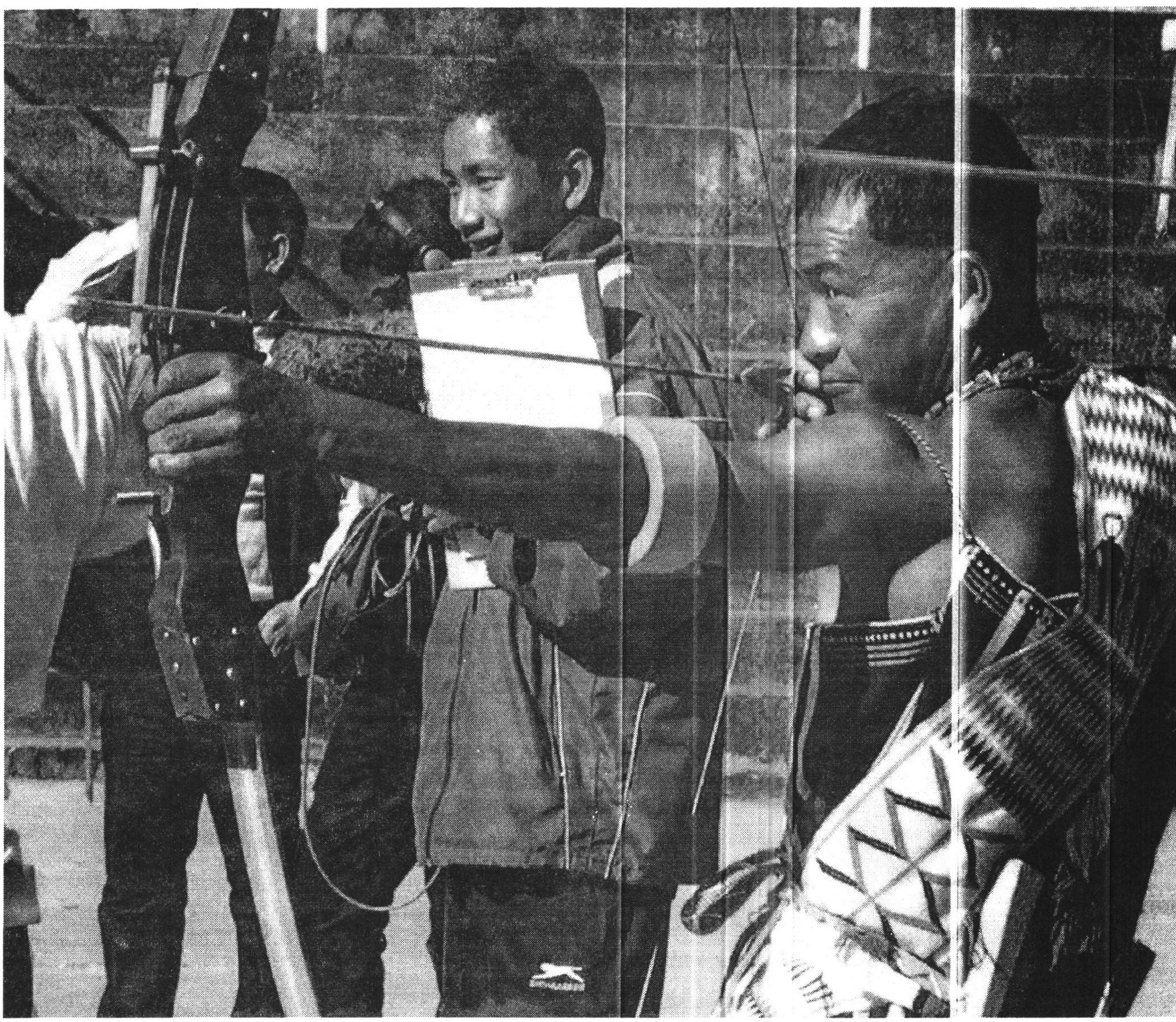

रेडियो
एक प्रभावी माध्यम

❑ निशिकांत जोशी
सहायक अभियंता
आकाशवाणी कोहिमा

रेडियो का आविष्कार इटली के मार्कोनी नामक वैज्ञानिक ने किया। इसी माध्यम को उपयोग में लाया गया। रेडियो को दूर जंगल, पहाड़, रेगिस्तान एवं सफर में भी सुन सकते है। रेडियो सुनकर जानकारी हासिल कर सकते है। विशेष रूप से जहाँ टेलीविजन नहीं है वहाँ तो जरूर रेडियो सुन सकते है।

जीवन में अनेक क्षेत्र में रेडियो लाभकारी है। सभ्यता और संस्कृति, ज्ञान-विज्ञान में रेडियो ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। रेडियो को प्रचार के साधन, शिक्षण कार्य एवं मनोरंजन का माध्यम के रूप में उपयोग में लाया गया।

देश के विभिन्न केन्द्रों से इसका प्रसारण होता है। क्षेत्रीय भाषा में अलग-अलग राज्य से रेडिओं का प्रसारण सुना जा सकता है। मुख्यतः सरकार विविध योजनाएं, शासन नीति का प्रचार किया जाता है। इसके अलावा संगीत, नाटक, वार्ताओं, समाचार का प्रसारण किया जाता है।

मधुर संगीत, कवि सम्मेलन, मुशायरे, शहनाई, वीणा वादन आदि मनोरंजन घर बैठे उपलब्ध हो जाते है। सोना, चांदी, अनाज के भाव का उतार-चड़ाव, फसल और वर्षा की भी जानकारी होती है।

हर घंटे में समाचार का प्रसारण होता है। क्षत्रीय भाषा में भी समाचार का प्रसारण किया जाता है। ज्वलनशील विषय पर शेर वार्ता, चर्चा, रेडियो ब्रीज के माध्यम से सुना जा सकता है। इस कार्यक्रम के दौरान टेलिफोन द्वारा सहभाग लिया जा सकता है। अपने विचार प्रकट कर सकते है।

रेडियो का प्रचलन बहुत तेजी से बढ़ रहा है। बड़े

नगरों में एवं दूर दराज में भी रेडियो स्टेशन स्थापित हो गए है। कुछ केन्द्रों से इसका दिन-रात प्रसारण हो रहा है।

रेडियो का प्रसारण दूरदर्शन के फ्री-टू एयर डी.टी.एच. पर भी उपलब्ध है। इससे भी बढ़कर आकाशवाणी का प्रसारण मोबाईल (एन्ड्रॉईड) पर न्यूज-ऑन-एयर एप के माध्यम से प्रभावी तरीके से सुना जा सकता है इसे देश और विदेश में भी सुना जा सकता है। देश के प्रधानमंत्री मा. नरेन्द्र मोदी जी का मन की बात का भी प्रसारण आकाशवाणी के सभी केन्द्रों से सुना जा सकता है।

इसलिये रेडियो एक प्रभावी माध्यम है। इसका हम उपयोग कर सकते है। धन्यवाद।

❑ जे एस नायर
नायब सूबेदार/ क्लर्क
मुख्यालय महानिरीक्षक
असम राइफल्स (नार्थ)

बच्चों की परवरिश में प्यार के साथ-साथ संस्कार भी जरुरी

प्रत्येक बच्चे के लिए घर-परिवार पहला विद्यालय होता है व माँ पहली शिक्षिका होती है इसलिए हमें अपने घर का माहोल सदैव प्यार और सहयोग वाला रखना चाहिए तथा घर परिवार की उलझनों को प्यार के साथ ही सुलझाना चाहिए। घर में किसी भी पारिवरिक सदस्य के विषय में नकारात्मक व विरोधी भाव नही रखने चाहिए क्योंकि इनका सीधा प्रभाव बच्चे के तन मन पर पड़ता है। बीज जैसा बोया जाता है फल वैसा ही मिलता है। यदि हमने बबूल का बीज डाला है तो हमें आम का फल कैसे प्राप्त होगी। बबुल के बीज से तो कांटे ही मिलेगे। अगर हमारा आधार अच्छा है तो उसके ऊपर जो भी इमारत खड़ी की जायेगी वह मजबूत व खुबसुरत होगी। इसलिए हमें सदैव घर परिवार में सकारात्मक, सुन्दर, शान्तिपूर्ण व्यवहार व वातावरण बना कर रखना चाहिए। क्योकि जब किसी परिवार में पहला बच्चा आने वाला होता है तो सभी अपने-अपने रिश्ते के अनुसार सपने संजोते हैं व पहली बार माता-पिता बनने पर उत्साह के साथ-साथ एक चिन्ता भी होती है कि वर्तमान समय के अनुसार हम बच्चे की भलीभांति परवरिश कर पाएंगे या नही क्योंकि आस-पास व समाज में सभी अपने बच्चों की परवरिश अपने-अपने तर्कों, परिस्थियों व उपलब्ध साधनों के अनुसार करते हैं जिसमें कई माता-पिता अधिक लाड़ प्यार से बच्चों को जिद्दी, गुस्सैल, अनुशासनहीन व संस्कारविहीन बना देते है जबकी संस्कारवान व संयमित जीवन जीने वाले माता-पिता इस आधुनिकता में भी अपने बच्चों को सुशील, शिक्षित, शिष्टाचारी व संस्कारी बना देते है।

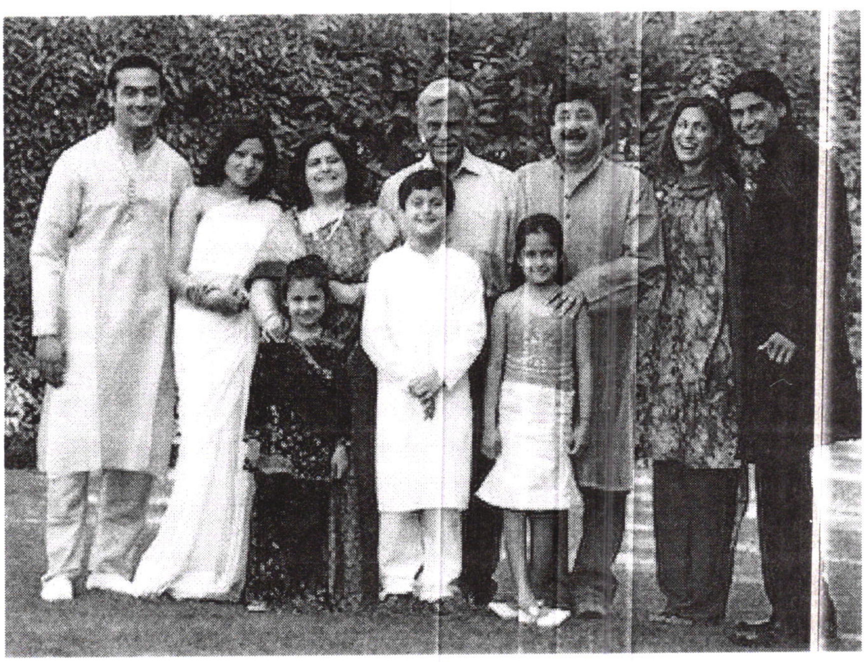

इसलिए बच्चें की परवरिश के लिए तरीका जो भी अपनाएं प्यार व आत्मीयता के साथ-साथ संस्कारों वाला होना चाहिए ताकि बच्चे का जुड़ाव हमेशा अपने घर परिवार से बना रहे। बच्चे को आधुनिक सुख सुविधाओं के साथ-साथ प्राकृतिक संसाधनों से भी आगे बढ़ने दें तथा उसे अपना बचपन जीने दे व बचपन का पुरा आनन्द उठाने दें क्योंकि बचपन

दुबारा नहीं आता इसलिए आप भी बच्चे के साथ बच्चे बनकर उसकी मासूमियत का आनन्द उठायें जिससे बच्चे में आत्म विश्वास पैदा होगा व आपके प्रति लगाव अधिक ज्यादा होगा। बच्चे को सदैव उसकी उम्र व क्षमता के अनुसार ही प्रत्येक शिक्षा दी जाए क्योंकि उम्र व क्षमता से ज्यादा आधुनिक तकनीकी वाली शिक्षा बच्चे को जिद्दी, नर्वस, चिड़चिड़ा बना देती है।

अगर हम चाहते है कि बच्चा हर क्षेत्र में सफल, सभ्य व दक्ष बने तो हमें अपने बच्चों की तुलना अन्य बच्चों से नहीं करनी चाहिए तथा उनके साथ सदैव दोस्ताना व प्यार वाला व्यवहार करना चाहिए। सदैव उनके संरक्षक बनकर साथ रहना चाहिए कभी भी तानाशाह वाली स्थिति पैदा नहीं करनी चाहिए। बच्चों के साथ सदैव शेयरिंग व केयरिंग वाली पॉलिसी रखनी चाहिए ताकि बच्चे अपने घर परिवार में सभी सदस्यों के साथ अपने आपको सुरक्षित महसूस कर सके। बच्चे के समुचित विकास के लिए प्यार के साथ-साथ संस्कार अति आवश्यक है इसलिए उसकी गलतियों, बदतमीजियों को नजर अंदाज नहीं करना चाहिए उसे सही व गलत में फर्क तथा जायज व नाजायज मांग में फर्क, उचित अनुचित व्यवहार के प्रति सदैव स्पष्ट रूप से समझाना चाहिए।

संस्कार देने वाले माता-पिता व संस्कार ग्रहण करने वाली संतान होने से ही व्यक्ति संस्कारवान बनता है।

इस आधुनिकता व स्वार्थी रिश्ते वाले समाज में अधिकांश परिवारों व समाज में आज बुजुर्गों के द्वारा यह कहते हुए सुना जाता है कि अब वो संस्कार कहां, या फिर किसी शरारती बच्चे के लिए कि इसमें संस्कार नाम की चीज ही नहीं है। आज के समय में बच्चे को सबसे बड़ी आवश्यकता शिक्षा नहीं चरित्र की है जो संस्कारों से निर्मित होता है क्योंकि समाज में सभी सुख सुविधाएं मिलने के पश्चात् भी बच्चे, युवक व मनुष्य क्रूरता, बर्बरता और असहिष्णुता की ओर बढ़ रहे है जिसके कारण हमारी मर्यादाएं व संस्कार नष्ट हो रहे हैं। समाज में एक-दूसरे के प्रति नफरत फैल रहे है, छोटे-छोटे मामलों पर लोग अपना आपा खो बैठते है। बाहर की तो हम क्या बात करें घर परिवार में ही अपनों के बीच बहु-बेटी की आबरू सुरक्षित नहीं है। समाज में संयुक्त परिवारों का विघटन हो गया है तथा एकल परिवार व अकेले रहने की प्रथा ने जन्म ले लिया है। समाज में यह अव्यवस्था व विकृति कैसे पैदा हुई है इसका सबसे बड़ा कारण है कि परिवार में बुजुर्ग व माँ-बाप कमजोर पड़ गए है तथा समाज में अच्छी मिशालें भी नहीं रही व सामाजिक मूल्य धीरे-धीरे खत्म होते जा रहे है।

इसलिए आज हमें अपने संस्कारों व रीति-रिवाजों के साथ-साथ पारिवारिक परम्पराओं को भूलना नहीं चाहिए। हमें जो भी आधुनिक सुख सुविधाएं मिल रही है उनका सही प्रयोग करते हुए आनन्द लेना चाहिए न की इनकी आड़ में अपने शिष्टाचार व संस्कारों को त्याग दें। अगर बच्चे संस्कार ही प्राप्त नहीं करेंगे तो उनकी शिक्षा, सफलता व आधुनिकता बेकार हो जाएगी उसी प्रकार जैसे एक कृत्रिम फूल को देखने से बहुत सुन्दर लगता है तथा उसको इस आधार पर सजा कर के रखते है लेकिन इस फूल में असली फूल की तरह महक नहीं होती। संस्कार भी असली फूल की महक की तरह है जो सदैव सफलता व खुशियों के साथ व्यक्ति को समाज में जीने, आगे बढ़ने की राह प्रदान करती है।

माधव कन्दली की रचनाओं में राम

□ चित्तरंजन लाल भारती
हिन्दी अधिकारी, मा. सं. एवं का. विभाग
हिन्दुस्तान पेपर कॉरपोरेशन लिमिटेड
कछाड़ पेपर मिल, पो. - पंचग्राम (असम)

वर्षा ऋतु में आकाश में टंगा सप्तवर्णी मनभावन दृश्य जिसे हम "इंद्रधनुष" कहते हैं, मतलब प्रकृति का एक मनोहारी दृश्य, को हिन्दी क्षेत्र ने "इन्द्र" को समर्पित कर उसके प्रति अपना आभार प्रकट किया है। मगर पूर्वोत्तर भारत में इसे "रामधेनु" कहा जाता है। क्या यह बताने के लिये यह पर्याप्त नहीं है कि पूर्वोत्तर में राम कितने लोकप्रिय है तथा उनके प्रति स्थानीय जनमानस कितना श्रद्धावान है।

बाल्मीकि कृत संस्कृत रामायण भारत में सिर्फ प्रबुद्ध एवं विशिष्ट लोगों तक ही सीमित था। कारण कि एक तो विशिष्ट वर्ग का ही संस्कृत पर आधिपत्य था और अध्ययन-अध्यापन व चिंतन-मनन आदि भी स्वयं तक सीमित रखता था। 14वीं सदी के मध्य में असम के एक कछाड़ी राजा महामाणिक्य ने सर्वप्रथम इस संस्कृत महाकाव्य रामायण को अपने जन-समुदाय तक स्थानीय भाषा में पहुँचाने का संकल्प लिया। उन्होंने माधव कंदली को इसके लिये आमंत्रित किया, जिसके लिये वे सहर्ष तैयार हो गये। इस प्रकार संस्कृत से इतर किसी अन्य भाषा में सर्वप्रथम अनुवाद का श्रेय आसामी भाषा को जाता है। इसके लगभग सौ साल बाद ही बांग्ला में "कृतिवास रामायण" और हिंदी में "राम-चरित मानस" के रूप में इसका अनुवाद प्रस्तुत हुआ। और इसके बाद तो अन्य भी भारतीय भाषाओं में इसके अनुवाद होने लगे।

असम के कछाड़ी राजा "महामाणिक्य" का राज्य कोई बहुत बड़ा नहीं था। असम के वर्तमान नगांव जिला और उसके समीपवर्ती क्षेत्र ही उसके राज्य-क्षेत्र थे। जो भी हो, उन्होंने चाहें कोई बहुत बड़ा साम्राज्य कायम कर असमीया इतिहास में भले ही कोई उल्लेखनीय भूमिका का निर्वाह न किया हो, परंतु उसके द्वारा किया गया यह महती कार्य मील का पत्थर साबित हुआ। आसामी भाषा और साहित्य के लिये एक मार्ग सा भी खुल गया। फिर भी माधव कंदली द्वारा आसामी में अनुवाद और लिखित "कथा-रामायण" को वह लोकप्रियता नहीं मिल सकी, जो उसे मिलनी चाहिए थी। काल की प्रवाह में यह लुप्त होने के कगार पर था। मगर 15वीं सदी में असम के प्रख्यात् संत-पुरूष एवं भक्ति-कवि शंकरदेव की उस पर नजर पड़ी, तो वह उसकी तरफ आकृष्ट हुए। मगर तब तक इसका आदिकाण्ड एवं उत्तरकाण्ड विलुप्त हो चुका था। बहुत खोज करने पर भी इसका आदि एवं उत्तरकाण्ड उपलब्ध न हो सका। तब उन्होंने अपने शिष्य माधवदेव के द्वारा इसका आदिकाण्ड लिखवाया और स्वयं उत्तरकाण्ड लिखकर इसे पूर्ण किया।

शंकरदेव उस समय तक अपनी भारत भर की दूसरी तीर्थयात्रा कर चुके थे। उन दिनों भारत में मीरा, चैतन्य, सूरदास सहित अष्टछाप कवियों के कृष्ण-काव्य की धूम थी। स्वाभाविक ही शंकरदेव उसमें रम गए। और असम में "भागवत धर्म" की परिपाटी शुरू की। इसके लिये उन्होंने अनेक नाटक लिखें और उनका मंचन शुरू करवाया। इसके अलावा रासलीलाओं एवं मुखौटा-नृत्य आदि की भी परंपरा शुरू की।

शंकरदेव की आस्था राम में भी थी। उन्होंने "राम-परशुराम प्रसंग" पर एक नाटक "राम-विजय" नाटक भी लिखा था। फिर भी माधव कंदली कृत "रामायण" कृष्ण सम्बंधित काव्य-नाटक आदि के बीच दबकर रह गया। इसका प्रमुख कारण तो यहीं रहा कि एक तो यह रामायण कथात्मक महाकाव्य था, जिसे हृदयंगम करने हेतु दीर्घावधि तक सम्पूर्ण रूप से समझाने की जरुरत पड़ती। दूसरे रामायण के सभी कथानक उत्तर भारत के है, जिनसे स्थानीय लोग एकाकार नहीं हो पाये। जबकि कृष्ण से सम्बंधित अनेक कथानक पूर्वोत्तर से जुड़े रहने के कारण स्थानीय लोग इसके साथ

एकात्मकता का बोध करते थे और यही कारण है कि कृष्ण काव्य-नाटक परम्परा का असम में व्यापक प्रचार-प्रसार हुआ और विस्तार मिला।

कृतिवास रामायण एवं तुलसी कृत रामसरित मानस की लोकप्रियता के अनेक कारण थे, जिसमें प्रमुखतः उन्हें ईश्वर के अवतार के रूप में प्रस्तुत किया गया है। जबकि माधव कंदली के राम के साथ ऐसा नहीं है। असम की प्रसिद्ध लेखिका एवं ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता मामोनी रयसम गोस्वामी ने अपने शोध प्रबंध "Ramayana from Gango to Brahmaputro" में माधव कंदली कृत रामायण और तुलसी कृत "राम-चरित मानस" का तुलनात्मक अध्ययन प्रशंसनीय ढंग से किया है। वह एक जगह सही लिखती है कि "माधव कंदली ने रामायण के पात्रों को दैविक के बदले मानवीय रूप दिया... उन्हें मानवीय संवेदनाओं से युक्त किया। इसलिये उसे वह धार्मिक मान्यता नहीं मिल पाई, जो 15वीं सदी के कृतिवास रामायण और 16वीं सदी के रामचरित मानस को मिला।"

इसका कारण यहीं था कि माधव कंदली एक राज्याश्रित कवि थे। राजकीय एवं ऐन्द्रिक श्रृंगारिकता का वर्णन उनकी विवशता थी। इसलिये उसमें वह लयात्मकता और गीतात्मकता आ नहीं पाया, जो जनसाधारण को सहज भी आकृष्ट कर लेता। माधव कंदली की तरह तुलसी दास ने भी लोक भाषा अवधि-हिंदी में रामायण का अनुवाद किया था। मगर चूँकि तुलसी राज्याश्रित नहीं थे, इसलिये विद्वत् विशिष्ट वर्ग ने उसके "राम-चरित मानस" का जमकर विरोध किया। "धूत कहो अवधूत कहो" आदि कहकर इसलिये तुलसी ने अपने विरोधियों को शालीनतापूर्वक उत्तर दिया। यहाँ तक कि उनका भी यशोगान कर उन्हें संतुष्टि प्रदान कर दी। राज्याश्रित माधव कंदली आधि-व्याधि से दूर रहे। जबकि तुलसी दास जब अपने हाथों की असहाय पीड़ा से ग्रस्त हुए तो उसी पीड़ा के बीच "हनुमान बाहुक" लिखी। राम कथा-काव्य एवं कीर्तन-वाचन कर अपना जीवन-यापन चलाने वाले, यहाँ तक कि "मांग के खैहों मसित में सोइहों" तक के लिये तत्पर तुलसी जन-साधारण के बीच सर्वसुलभ थे। और इसलिये उन्होंने जन-साधारण की नब्ज पकड़ अपनी संवेदनाओं को अपने काव्य में उतार उसे लोकप्रियता प्रदान की। वह एक समन्वयवादी कवि के रूप में राम और शिव अर्थात् शैव एवं वैष्णव के बीच ज्ञान और भक्ति के बीच समन्वय स्थापित किया। उनका समन्वयकारी रूप ऐसे है कि वह मल्लाह-भील आदि निम्न जातियों के ही गले नहीं लगते, बल्कि वानर-भालू जैसे असभ्य जीवों के प्रति भी अपनी सदाशयता दिखाते है। यह स्पष्ट है कि राम, वह चाहे वनवासी राम हो या राजा राम, हर कहीं एक आदर्शवादी व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत हुए है। वह एक आदर्श पुत्र है, आदर्श शिष्य है, आदर्श पति व आदर्श भाई भी है। वह अपने मित्र के समक्ष ही नहीं, बल्कि शत्रु के समक्ष भी आदर्श रूप में प्रस्तुत है। उनके चरित्र चित्रण में श्रृंगारिकता का अवकाश कहाँ है।

राम का सम्पूर्ण जीवन संघर्षों एवं अभावों से परिपूर्ण है। प्रथम राज्यरोहण के समय उन्हें वनवास मिल गया। दूसरी बार राज्यरोहण हुआ, तो पत्नी का वनवास हो गया। ऐसे में उनमें रागात्मकता कहाँ रह पाती? ऐसे में जब उसमें रागात्मकता और श्रृंगारिकता का समावेश हो जाए तो वह मौलिक नहीं दिखता। ऐसे ही माधव कंदली कृत रामायण में हुआ, तो इसे जन-साधारण पचा नहीं पाया। और इस प्रकार वह लोकप्रियता से वंचित हो गया। माधव कंदली एक छोटे से अनाम से राज्य नगर के वासी थे। जबकि काशी ऐसा तीर्थ है जहाँ प्रति दिन हजारों तीर्थ यात्री आते-जाते थे। वहाँ संत समागम स्वाभाविक ढंग से चलता रहता था। तुलसी दास को इसका प्रचुर लाभ मिला। जबकि माधव कंदली इससे वंचित थे। उन्होंने जो कुछ भी प्रस्तुत किया, वह अपने दम पर, अपने ज्ञान और स्वाध्याय पर किया। माधव कंदली कृत रामायण का अपना ऐतिहासिक एवं विशिष्ट महत्व है, क्योंकि यह असमीया साहित्य का प्रथम अनुपम ग्रन्थ है। स्वर्गीय नवारूण वर्मा ने बीसेक वर्ष पूर्व इसका सफल हिंदी अनुवाद किया था। जो पुस्तक रूप में उपलब्ध है।

स्वस्थ्य शरीर है सबसे बड़ा खजाना

❑ शाकिर अहमद
हिन्दी अनुवादक
मुख्यालय महानिरीक्षक असम
राइफल्स (उत्तरी)

आधुनिक जीवन शैली के तेज रफ्तार एवं भागदौड़ भरी जिन्दगी में सेहत का विषय बहुत पीछे रह गया है और नतीजा यह निकला है कि आज हम युवावस्था में ही ब्लड प्रेसर, डायविटीज, हृदय रोग, कॉलेस्ट्रॉल, मोटापा, गठिया, थायराइड जैसे रोगों से पीड़ित होने लगे है जो कि पहले प्रौढ़ावस्था एवं वृद्धावस्था में होते थे और उसकी सबसे बड़ी बजह है खान-पान और रहन-सहन की गलत आदतें। आओ हम सेहत के इन नियमों का पालन करके खुद भी स्वस्थ रहे तथा अन्य लोगों को भी स्वस्थ रहने के लिये जागरूक करें क्योंकि कहा भी गया है- पहना सुख निरोगी काया।

भोजन हो संतुलित- घी, तेल से बनी चीजें जैसे पुड़ी, पराठे, छोले-भटुरे, समोसे, कचौड़ी, फास्ट फुड, चाय, कॉफी, कोलड्रिंक्स का ज्यादा सेवन सेहत के लिये घातक है, इसका अधिक मात्रा में नियमित सेवन से ब्लड प्रेसर, कॉलेस्ट्रॉल, मधुमेह, मोटापा एवं हार्ट डिजीज का कारण बनता है तथा पेट में गैस, अल्सर ऐसीडिटी, बार-बार दस्त लगना, लीवर खराब होना जैसी तकलीफे होने लगती है। इसकी वजाय खाने में हरी सब्जियां, मौसमी फल, दूध, छाछ, अंकुरित अनाज और सलाद को शामिल करना चाहिये, जो कि भिटामिन, खनिज लवण, फाइबर एवं जीवनीय तत्व से भरपूर होते है और शरीर के लिये बहुत फायदेमंद होते है।

चीनी एवं नमक की अधिक मात्रा में सेवन न करें, ये डायबिटीज, ब्लड प्रेसर, हृदय रोगों का कारण है। बादाम, किसमिस, अंजीर अखरोट आदि मेवा सेहत के लिये बहुत लाभकारी होते है। इसका सेवन अवश्य करें। पानी एवं अन्य लिक्विड जैसे फलों का ताजा जूस, दूध, दही, छाछ, नींबु पानी, नारियल पानी का खुब सेवन करें। इनसे शरीर में पानी की कमी नहीं हो पाती। शरीर की त्वचा एवं चेहरे पर चमक आती है तथा शरीर की गंदगी पसीने एवं पेशाव के द्वारा बाहर निकल जाती है।

व्यायाम के नियमित अभ्यास सूर्योदय से पहले उठकर अपने नित्य कर्म कर लें। हरी घास पर नंगे पाव घुमे, दौड़ लगायें। अगर दौड़ नहीं सकते तो वाक करें, योगा प्राणायाम करें। इन उपायों से शरीर से पसीना निकलता है, मांसपेशियों को ताकत मिलती है। शरीर में रक्त संचार बढ़ता है। अनेक शारीरिक एवं मानसिक रोगों से बचाव होता है। पुरे दिन भर बदन में चुस्ती एवं फुर्ती रहती है। भुख अच्छी लगती है। इसलिये नियमित रूप से व्यायाम अवश्य करें।

गहरी नींद भी जरुरी है। शरीर एवं मन को स्वस्थ रखने के लिये प्रतिदिन लगभग सात घंटे की गहरी नींद स्वस्थ के लिये जरुरी है। लगातार नींद पुरी न होने तथा बार-बार नींद खुलना अनेक बीमारियों का कारण बनता है। अच्छी नींद के लिये यह उपाय करें- सोने का कमरा साफ-सुथरा, शांत एवं एकान्त में होना चाहिये। रात को अधिकतम 10-11 बजे तक सो जाना और सुबह 5-6 बजे तक उठ जाना स्वस्थ के लिये अच्छा माना जाता है। खाना खाने के बाद 20-25 मिनट अवश्य घुमें।

टेंसन को कहें बाय-बाय - रोजमर्रा की जिंदगी में आनेवाली समस्या के लिये चिंतन करना सही है। चिंता करना नहीं, चिंता तो फिर भी करने के बाद शरीर को जलाती है। किंतु लगातार अनावश्यक चिंता जीते जी शरीर को जला देती है। इसलिये तनाव होने पर भाई-बंधु एवं विश्वास पात्र, मित्रों से सलाह-मसवरा करें। यदि समस्या फिर भी न सुलझे तो विशेषज्ञ से राय लें।

❑ सतेन्द्र कुमार
हवलदार/क्लर्क
मुख्यालय महानिरीक्षक
असम राइफल्स (नॉर्थ)

बुलन्द हौसलों की कहानी

मुसीबतें हमारी जिन्दगी की एक सच्चाई है। कोई इस बात को समझ लेता है तो कोई पूरी जिन्दगी इसका रोना रोता है। जिन्दगी के हर मोड़ पर हमारा सामना मुसीबतों से होता है, इसके बिना जिन्दगी की कल्पना नहीं की जा सकती। अक्सर हमारे मुसीबतें आती हैं तो हम उनके सामने पस्त हो जाते हैं। उस समय हमें कुछ समझ नहीं आता कि क्या सही है और क्या गलत। हर व्यक्ति का परिस्थितियों का देखने का नजरिया अलग अलग होता है। कई बार हमारी जिन्दगी में मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ता है। उस कठिन समय में कुछ सम्भल जाते हैं।

मनोविज्ञान के अनुसार इन्सान किसी भी समस्या को दो तरीको से देखता हैं।

1. Problem पर Focus करके (Problem Focus people)
2. Solution पर Focus करके (Solution Focus people)

Problem Focus People अक्सर मुसीबतों में ढेर हो जाते हैं। इस तरीके के इंसान किसी भी मुसीबत में उसके हल की बजाय उस मुसीबत के बारे मे ज्यादा सोचते हैं। वही दूसरी और Solution Focus people मुसीबतों में उसके हल के बारे मे ज्यादा सोचते हैं। इस तरह के इंसान मुसीबतों का डटके सामना करते हैं।

दोस्तों अब मैं अपके साथ एक महान Solution Focus इंसान की कहानी शेयर करने जा रहा हूँ जो आपको किसी भी मुसीबत से लड़ने का लिए प्रोत्साहित करेगी। दोस्तों आप नेपोलियन बोनापोर्ट का नाम तो सुना ही होगा। जी हां वही नेपोलियन बोनापोर्ट जो फ्रांस के एक महान निडर और साहसी शासक थे जिनके जीवन में असंभव नाम का कोई शब्द नहीं था। इतिहास में नेपोलियन को सबसे महान और अजय सेनापतियों में से एक गिना जाता है। वह इतिहास के सबसे महान विजेताओं में से माने जाते थे। उनके सामने कोई रूक नहीं पाता था। नेपोलियन अक्सर जोखिम भरे काम किया करते थे। एक बार उन्होंने आलपास पर्वत को पार करने का एलान किया और अपनी सेना के साथ चल पड़े। सामने एक विशाल और गगनचुम्बी पहाड़ खड़ा था जिस पर चढ़ाई करना असंभव था। उसकी सेना में अचानक हलचल की स्थिति पैदा हो गई। फिर भी उसने अपनी सेना को चढ़ाई का आदेश दिया। पास में ही एक बुजुर्ग औरत खड़ी थी। उसने जैसे ही यह सुना वो उसके पास आकर बोली क्यों मरना चाहते हो। यहाँ जितने भी लोग आये हैं वह मुह की खाकर यहीं रह गये। अगर अपनी जिंदगी से प्यार है तो वापस चले जाओ। उस औरत की यह बात सुनकर नेपोलियन नराज होने की बजाय प्रेरित हो गया और झट से हीरो का हार उतार कर उस बुजुर्ग महिला को पहना दिया और फिर बोले आपने मेरा उत्साह दुगुना कर दिया और मुझे प्रेरित किया है। लेकिन अगर मैं जिंदा बचा तो आप मेरी जय-जयकार करना। उस औरत ने नेपोलियन की बात सुनकर कहाँ तुम पहले इंसान हो जो मेरी बात सुनकर हताश और निराश नहीं हुए। **"जो करने या मरने और मुसीबतों का सामना करने का इरादा रखते हैं वह लोग कभी नहीं हारते।"**

आज सचिन तेन्दुलकर को इसलिए क्रिकेट का भगवान कहा जाता है क्योंकि उन्होंने जरूरत के समय ही अपना शानदार खेल दिखाया और भारतीय टीम को मुसीबतों से उभारा। ऐसा नहीं हैं कि यह मुसीबतें हम जैसे लोगों के सामने ही आती हैं, भगवान श्री राम के सामने भी मुसीबतें आई हैं। विवाह के बाद वनवास की मुसीबत। उन्होंने सभी मुसीबतों का सामना आदर्श तरीके से किया। तभी वो मर्यादा पुरूषोत्तम कहलाये जाते हैं मुसीबतें ही हमें आदर्श बनाती हैं।

अन्त में एक बात हमेशा याद रखियें :

"जिन्दगी में मुसीबतें चाय के कप में जमी मलाई की तरह है, और कामयाब वो लोग हैं जिन्हें फूंक मार के मलाई को साईड कर चाय पीना आता है।"

❑ सुश्री श्रेयसी भौमिक
सुपुत्री - सुब्रत भौमिक
सहायक कल्याण अधिकारी
प्र. म. का कार्यालय, नगालैण्ड

स्वयं, स्वयं सहायता

उचित ही कहा गया है कि जब तक आप अपनी क्षमताओं पर संशय करते हो, तो आप अपने संशय को खुद सशक्त करते हो। आपका दिमाग कहता है आप नहीं कर सकते हो, तुम कभी काबिल ही नहीं थे, तुम असफल होंगे। इस प्रकार का भय आपको सताता है जब भी आप कोई नया लक्ष्य निर्धारित करते हो। यह आपको कोसता है जब भी जिंदगी कठिन होती है।

जब भी आप खड़ा होने की कोशिश करते हो जिंदगी आपको नीचे की ओर धकेलती है। बहुत बार कई लोगों ने आपको बताया होगा कि आप नहीं कर सकते। इन लोगों में आपके रिश्तेदार, माता-पिता एवं मित्र शामिल होंगे। जब भी आप किसी संगीत या नृत्य प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते हो, वे कहते हैं आप नहीं कर पाओगे। लेकिन मैं कहती हूँ कि अपनी जिंदगी का मालिक बनें एवं स्वयं पर विश्वास रखें। प्रत्येक मनुष्य का दिमाग एक जैसा ही होता है, अंतर केवल इतना है कि आप अपने लक्ष्य के प्रति कितने समर्पित हैं। अगर आप अपने आप को हतोत्साहित करते हो तो आपके आसपास वाले सभी आपके साथ भी वैसा ही करेंगे।

जब आप सुबह उठें, पर्दे को साइड करते हुए, सूर्य की किरणों का आनंद लेते हुए अपने आप से कहे "खुशनुमा और खूबसूरत दिन हो।" बहुत से सफल व्यक्ति जन्म से वैज्ञानिक, डाक्टर, इंजीनियर या खिलाड़ी नहीं थे। ये लोग अपनी जिंदगी में कई बार असफल हुए। लेकिन प्रयास करना नहीं छोड़े। वे जानते थे कि असफलता रूपी चुनौती आपको श्रेष्ठ बनाने कि लिये आई है। इसीलिए कभी हार नहीं माने।

अतः जब आप असफल हो तो दुखी न हों, चुनौतियों

का सामना करें और याद रखें कि सफलता अंतिम नहीं है और असफलता जानलेवा नहीं है। लगातार प्रयास करने का साहस जो मायने रखता है। इसलिए कल में विश्वास करें, स्वप्नों में विश्वास करें और अपनी जिंदगी के स्वामी बनें। जब भगवान ने हमें बुद्धि और बल दिया है तो हम हमेशा दूसरों पर क्यों निर्भर रहते हैं। हम आत्मविश्वास व आंतरिक शक्ति के स्वयं की सहायता कर सकते है। यदि हम विश्वास के साथ कोई कार्य करते हैं तो असफलता मिल सकती है लेकिन अंततः हम सफलता अवश्य प्राप्त कर लेंगे। यहाँ तक कि माता-पिता को भी बच्चों की आवश्यकता से ज्यादा सहायता नहीं करनी चाहिए। यदि उन्हें ज्यादा सहायता दी जाती है तो वे दूसरों पर ज्यादा निर्भर हो जाएंगे। स्वयं सहायता आत्मसम्मान की भावना को जन्म देती है। अपने भविष्य पर ध्यान केंद्रित करें और आप अचंभित हो जाएंगे कि आपने क्या पा लिया, हम शक्तिहीन नहीं हैं जो हम बनना चाहते है उसके करीब या कुछ करीब पहुँच जाएंगे, रेबीका वेब्बेर का कथन है।

❑ श्री चंद्र केतु नारायण सिंह
टी.जी.टी. हिंदी
जवाहर नवोदय विद्यालय
कोहिमा, (नागालैण्ड)

'नवोदय' एक परिचय

परिचय : जवाहर नवोदय विद्यालय पूरे भारत के प्रत्येक जिले में 1 या 2 है। यह विद्यालय भारत सरकार के मानव विकास मंत्रालय के अंतर्गत आता है। यह एक आवासीय विद्यालय है जहाँ सह शिक्षा की व्यवस्था है। यहां बच्चे कक्षा 6 से 12 तक की पढ़ाई पूर्ण कर सकते हैं। आज पूरे भारतवर्ष में कुल 661 विद्यालय 28 राज्यों और 7 केंद्रीय शासित राज्यों में चल रहे हैं। यह विद्यालय पूर्णतया निःशुल्क विद्यालय है। यहां पढ़ने वाले छात्रों को 1 रुपये भी स्कूल को देने की जरूरत नहीं पड़ती है। Addmission से लेकर, रहना, खाना-पीना, स्कूल यूनिफार्म, किताब, कॉपी, कलम, टॉयलेट आइटम्स, मछरदानी, रजाई आदि हर प्रकार की सुविधाए निःशुल्क रूप से बच्चों को प्रदान की जाती है। इस विद्यालय में 75% बच्चे ग्रामीण अंचल से आते हैं और बिना खर्च उत्तम स्तर की शिक्षा ग्रहण करते हैं। ये बच्चे बहुत ही गरीब परिवार से आते हैं। यह विद्यालय उन अभिभावकों के लिए बहुत ही उत्तम है जो गरीबी रेखा से नीचे रह रहे हैं या गरीब हैं। क्योंकि उन्हें खर्च भी नहीं करना पड़ता और उनके बच्चों को उत्तम स्तर की शिक्षा ग्रहण करने का मौका मिलता है।

उद्देश्य : इस विद्यालय के गठन की परिकल्पना स्वर्गीय राजीव गाँधी जी के दिमाग में आयी। इस विद्यालय के गठन का उद्देश्य था कि जो बच्चे गरीब हैं, पढ़ाई में अच्छे हैं, मेधावी हैं लेकिन पैसे के अभाव में अपनी शिक्षा पूर्ण नहीं कर पाते हैं, उनकी मदद की जा सके।

प्रवेश प्रणाली : इस विद्यालय में प्रवेश के लिए बच्चों को प्रवेश परीक्षा देना पड़ता है जो कि साल में 1 बार आयोजित होती है। इस विद्यालय में कक्षा 6, कक्षा 9 और कक्षा 11 के लिए बच्चे आवेदन कर सकते हैं और प्रवेश परीक्षा उतीर्ण करने के उपरांत प्रवेश ले सकते हैं। इस विद्यालय में +2 स्तर तक की शिक्षा विभिन्न संकाय में +2 प्राप्त कर सकते हैं- जैसे Science, Com-

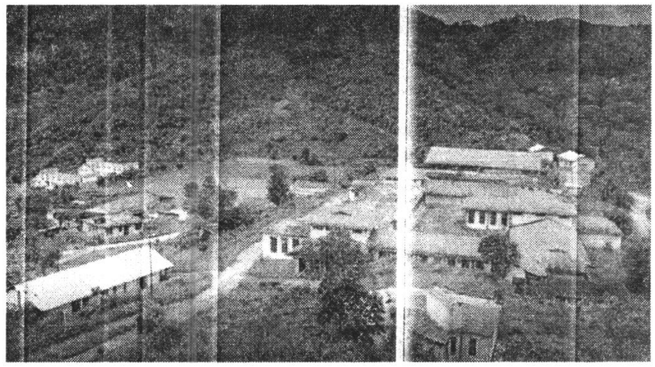

merce, Humanities and Bio-Technology.

विभिन्न क्रियाकलाप : इस विद्यालय में पढ़ाई के अलावा विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम वर्ष भर चलते रहते हैं- जैसे संगीत प्रतियोगिता, कला प्रतियोगिता, खेल प्रतियोगिता, Math's Olympiad, Science Congress, CCA आदि। यह पहले विद्यालय स्तर पर होता है फिर Regional Level उसके बाद Nation Lavel. जो बच्चे अच्छा करते हैं उन्हें अगले-अगले स्तर पर भेजा जाता है और उनके जाने आने, खाने-पीने का सारा खर्चा समिति के तरफ से वहन किया जाता है। बच्चों के सुरक्षा के लिहाज से उन्हें ले जाने, लाने के लिए विद्यालय से 1-2 कर्मचारी Escort duty करते हैं।

नागालैण्ड के परिपेक्ष में : आज पूरे नागालैण्ड में कुल 11 जवाहर नवोदय विद्यालय कार्यरत हैं, जो कि प्रत्येक जिले में 1-1 हैं। इन विद्यालयों में कक्षा 11 एवं 12 में Science, Commerce और Humanities की शिक्षा दी जाती है। कोहिमा में भी एक जवाहर नवोदय विद्यालय है, जो कि BSF Camp के बगल में है। विद्यालय के बारे में अधिक जानकारी एवं प्रवेश हेतु आप विद्यालय के प्राचार्य से संपर्क कर सकते हैं, उनका मोबाइल नंबर है - 9402163150। आपने अपना बहुमूल्य समय निकालकर इस लेख को पढ़ा, उसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

❑ प्रेम कुमार क्षत्री
प्रधान सम्पादक

पूर्वोत्तर भारत (असम) के विशिष्ट स्वतंत्रता संग्रामी नेता

सोने की चिड़िया कहे जाने वाले भारत को अंग्रेजों ने सौ सालों तक गुलाम बनाकर खूब लूटा। फिरंगियों का विरोध सर्वप्रथम मंगल पांडे द्वारा हुआ। उनके शहीद होने के पश्चात उनके द्वारा स्वराज प्राप्ति की शंखनाद से देश के कई हिस्सों में फिरंगियों के विरोध में आवाजें उठने लगी। लेकिन स्वतंत्रता संग्राम की यह आग पूरे देश के कोने-कोने तक तब फैली, जब महान देशभक्त भगत सिंह, राजगुरू व सुखदेव को देश से अंग्रेजों के चंगुल से छुड़ाने के लिए हँसते-हँसते फाँसी के फंदों पर झूल गए। देश के हित में अपने प्राण त्यागने वाले इन शहीदों को गुप्त तरीके से ब्रिटिश प्रशासन द्वारा फाँसी की सजा देने के पश्चात हर एक भारतीय स्वराज प्राप्ति के लिए अपनी-अपनी जान-न्यौछावर करने के लिए आतुर था। भारतीयों पर फिरंगियों की मनमानी क्रूरता, अत्याचार, जुल्म से तंग आकर देश के हर एक सच्चे देश के सपूत इस आग में कूद पड़े, ऐसा लगता था मानो अंग्रेजों को भारत से खदेड़ कर स्वतंत्र भारत की चाह में अपने-अपने क्षेत्र में काम कर रहे हों। स्वतंत्रता संग्राम की लपटें देश की कोने-कोने में फैल गई। ऐसे में पूर्वोत्तर भारत भी अछूता नहीं रहा। देशभक्त वकील चंद्र नाथ शर्मा, कनकलता, गोपीनाथ बरदलै जैसे महान स्वतंत्रता संग्रामियों के साथ-साथ शोणितपुर जिला (वर्तमान में विश्वनाथ जिला) के बाबू छबिलाल उपाध्याय (नेपाली) भी स्वतंत्रता आंदोलन के एक प्रमुख नेता थे। वे असम प्रदेश कांग्रेस कमेटी के पहले अध्यक्ष थे। उन्होंने 18 अप्रैल 1921 को जोरहाट में आयोजित असम एसोसिएशन की ऐतिहासिक बैठक की अध्यक्षता की, जिसने स्वयं को असम प्रदेश कांग्रेस कमेटी में बदलने का फैसला किया।

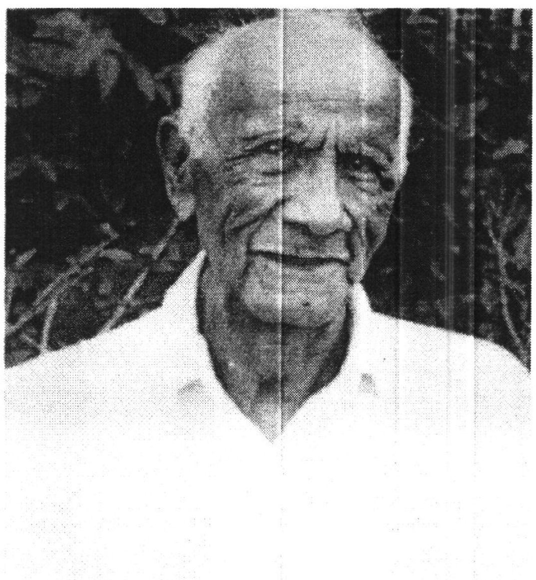

नेपाली बाबू छबिलाल उपाध्याय

गांधीवादी आदर्श से अनुप्राणित बाबू छबिलाल उपाध्याय ने सम्पूर्ण देश में स्वराज प्राप्ति के लिए चलाए गए सामान्य आन्दोलन, विदेशी सामान बहिष्कार कार्यसूची, असहयोग आंदोलन, भारत छोड़ो आन्दोलन आदि-आदि में अपना पूर्ण सहयोग दिया। लोकनायक लोकमान्य तिलक के स्वराज फंड में सक्रिय रूप से भाग लिया और बुद्धिमान और महान देशभक्त वकील करमवीर चन्द्र नाथ शर्मा को पूर्ण रूप से साथ दिया। इस कोष को पूरा करने के लिए असम के हिस्से जो भाग आया था उसे "कोटा" के नाम से जाना जाता था। जिसे चन्द्र नाथ शर्मा और छबिलाल उपाध्याय की अगुवाई में तय सीमा से पहले ही पूरा कर लिया गया। "कोटा" की सफलता पर ब्रिटिश प्रशासन तिलमिलाया। वे इसे असफल बनाने के लिए

कुछ भी नहीं कर सके लेकिन छबिलाल के हाथ से अपनी कारतूस के साथ बंदूक वापस छिन लिया और विदेशियों के अधिनियम के तहत निष्कासन की सूचना दी गई। छबिलाल के हितैषी चन्द्र नाथ शर्मा ने ब्रिटीश नौकरशाहों की इस अनैतिकता और अर्थ के इस तरह के एक अधिनियम के लिए खेद प्रकट किया। छबिलाल ने चन्द्र नाथ शर्मा की ब्रिटिश हुकूमत के विरुद्ध इस प्रतिक्रिया का ह्दय से स्वागत किया और कहा - मैं खुश हूँ (क्योंकि मैंने अपनी मातृभूमि को अंग्रेज के चंगुल से आजादी दिलाने के लिए कुछ किया।)

स्वर्गीय काशीनाथ उपाध्याय (धिमारे) और स्व. माता विष्णुमाया देवी के दूसरे पुत्र बाबू छबिलाल उपाध्याय का जन्म 12 मई 1882 को शोणितपुर जिला के (वर्तमान विश्वनाथ जिला) गंमौथान के माजगाँव में हुआ था। उनकी प्राथमिक शिक्षा बंगाली माध्यम में हैतीबोंडा प्राइमरी स्कूल में शुरू हुई थी। गाँव ब्रह्मपुत्र नदी के नष्ट होने के कारण प्राइमरी स्कूली शिक्षा बाधित हुई। लेकिन उनके दूरदर्शी व शिक्षा के महत्व को समझने वाले पिता ने घर पर ही शिक्षक के द्वारा उच्च शिक्षा के लिए संस्कृत, असमिया, अंग्रेजी, अंकगणित और भूगोल का आवश्यक ज्ञान दिलाए। बचपन से ही होनहार, स्पष्टवादी और नैतिकता से लैस छबिलाल मेघावी छात्र होने के कारण उन्हें कुछ खास तबज्जो देकर शिक्षा प्रदान करते रहे। वे ज्ञान हासिल करने के लिए बहुत उत्सुक थे जिनके फलस्वरुप उन्होंने अमरकोष के साथ-साथ वेदों का अध्ययन भी किया। स्कूली शिक्षा से वंचित रहे छबिलाल ने अपने हितैषी साथी बोगीराम सइकिया, मोलन चंद्र शर्मा, पवन चन्द्र बोरा, पंडित दत्ततर दास, रामलाल उपाध्याय, हरि प्रसाद उपाध्याय, टिकाराम उपाध्याय, वृहस्पति उपाध्याय, हरि प्रसाद (राम बाबू) उपाध्याय, भीष्म प्रसाद उपाध्याय, ट्रोइलोक्यानाथ शर्मा, कनक चन्द्र शर्मा, विजय शर्मा, राम प्रसाद अग्रवाल, ज्वाला प्रसाद अग्रवाल, नवीन चन्द्र भट्टाचार्य जैसे इच्छुक समाजसेवियों की मदद से कई स्कूलों और पुस्तकालयों की स्थापना की। उस समय बारोंगा बारी से विश्वनाथ चारआली तक कोई उच्च शिक्षा केंद्र नहीं था। जिसकी पूर्ति के लिए 26 फरवरी 1941 को हैतीबोंधा सीएम स्कूल में एक सामान्य बैठक आयोजित की गई और बाबू छबिलाल ने सर्वसम्मति से गंगमाउथन हाईस्कूल स्थापित करने का निर्णय लिया। बाद में इसका नाम बदलकर बेहाली हाई स्कूल रखा गया और 1985 में बेहाली हायर सेकेंडरी स्कूल में अपग्रेड किया गया।

उन्हें कई बार जेल भी जाना पड़ा। उनको फिरंगी अधिकारियों के द्वारा प्रलोभन भी दिया गया। एक बार कमिश्नर बी. सी. एलेन ने बाबू छबिलाल उपाध्याय को जेल के एक गुप्त कमरे में बुलाकर फुसलाते हुए कहा था कि कांग्रेस का काम करके अपने आप को बर्बाद मत करो। अगर आप हमारा कहना मानोगे तो आपकी सारी इच्छा पूर्ण कर दी जाएगी। इस पर बाबू छबिलाल ने जवाब दिया - व्यक्तिगत स्वार्थ देश कल्याण के स्वार्थ से कदाचित बड़ा नहीं हो सकता। मैं देश सेवा के संकल्प में अटल हूँ। इस प्रकार का लालच मुझे मत दीजिए।

छबिलाल उपाध्याय को देशवासी तथा अपना देश भारत के लिए जो त्याग किए थे उसकी स्वीकृति स्वरुप 30 सितंबर 1972 को पूर्वोत्तर भारत के असम जिला अंतर्गत तेजपुर स्थित त्यागवीर हेमचन्द्र बरुवा स्मृति भवन में बाबू छबिलाल को सार्वजनिक रूप से अभिनंदन किया गया। उस दिन उन्हें तेजपुर नगर परिक्रमा कराके भव्यता के साथ मंगलध्वनी, शंख-घंटा बजाकर मंच पर स्वागत किया गया था।

बाबू छबिलाल उपाध्याय अपनी मातृभूमि को अंग्रेज के चंगुल से आजादी दिलाने के लिए अनेक त्याग बलिदान किए थे। 11 अगस्त 1973 को अन्य एक समारोह में तात्कालीन मुख्य मंत्री शरतचन्द्र सिंह ने बाबू छबिलाल उपाध्याय को ताम्रपत्र प्रदान कर सम्मानित किया था।

परिशिष्ठ

1857 की क्रांति में अपनी अहम सहयोग देने वाले शहीद सुबेदार निरंजन सिंह क्षेत्री को 1891 में अंग्रेजों ने फॉसी की सजा दी। नेपाली-गोर्खा स्वतंत्रता सेनानियों की सूची-

1. अमर सिंह थापा,
2. आगम सिंह गिरी
3. भगत वीर लामा (शहीद)
4. भीम सिंह राणा (शहीद)
5. बलभद्र क्षेत्री
6. बैरागी बाबा
7. भैरव सिंह लामा
8. बुद्धिमान
9. वीर बहादुर गुरुंग
10. विशन सिंह खत्री
11. विष्णु लाल उपाध्याय
12. विशन सिंह राणा
13. भक्त बहादुर प्रधान
14. भीम बहादुर खड़का
15. भगवान सिंह थापा
16. भीम लाल शामरा
17. कैप्टन राम सिंह ठकुरी
18. कैप्टन दल बहादुर थापा (शहीद)
19. चन्द्र कुमार शर्मा
20. दल बहादुर गिरी
21. डिगबीर सिंह रामुडामू
22. दलबीर सिंह लोहार
23. ध्रुव सिंह थापा
24. देवी प्रसाद शर्मा
25. धरमानंद उपाध्याय मिश्रा
26. दाबेर सिंह हींगमान
27. गोरे खान
28. गागा चिरिंग डुकपा
29. गोपाल सिंह राणा
30. रामलाल उपाध्याय
31. राम सिंह गुरुंग
32. श्याम बहादुर थापा (शहीद)
33. शमशेर सिंह भंडारी
34. श्याम सिंह शाही
35. शेर बहादुर आले
36. शारकेर देव शर्मा
37. ठाकुर प्रसाद कुमाउ
38. तेज बहादुर थापा (1)
39. तेज बहादुर थापा (2)
40. तेज बहादुर सुब्बा
41. गोपाल सिंह शाही
42. हरि प्रसाद उपाध्याय
43. हरीश क्षेत्री
44. होशियार सिंह कार्की
45. हरि प्रसाद
46. ईश्वरचंद गोर्खा
47. इंद्राणी थापा (शहीद)
48. जंग वीर सांपकोटा
49. जय नारायण उपाध्याय नेपाल
50. कुमुद चंद्र गोरखा
51. कृष्ण बहादुर सोनार
52. खड़गा सिंह विष्ट
53. लक्ष्मण लिंबू
54. लाल बहादुर बस्नेत
55. मन बहादुर बस्नेत

56. मन बहादुर थापा (शहीद)
57. मोहन सिंह थापा (शहीद)
58. मेजर दुर्गा मल्ल (शहीद)
59. मास्टर मित्र सेन थापा
60. मन बहादुर राई
61. महावीर गिरी
62. नोरबू लामा
63. नोरबीर लामा
64. चितानंद तिमसिना
65. प्रीतम सिंह लामा
66. पारस राम थापा
67. पुतली माया देवी
68. पुष्प कुमार धिसिंग
69. पन्ना सिंह ठकुरी
70. पद्म प्रसाद ढुंगेल
71. प्रेम सिंह विष्ट (शहीद)
72. रतन सिंह लामा

उक्त वर्णित स्वतंत्रता संग्रामियों के अलावा बहुत सारे नाम इसमें समाहित न होने की वजह से क्षमा प्रार्थी हूँ। सभी स्वतंत्रता संग्रामियों को हृदय से नमन करता हूँ।

❑ अलीना
सुपुत्री : शाकिर अहमद
हिंदी अनुवादक
मुख्यालय आई जी ए आर (नार्थ)

समाज का असहाय वर्ग

जैसे ही ट्रेन रवाना होने को हुई, एक औरत और उसका पति एक ट्रंक लिए डिब्बे में घुस पड़े। दरवाजे के पास ही औरत तो बैठ गई पर आदमी चिंतातुर खड़ा था, जानता था कि उसके पास जनरल टिकट है और ये रिजर्वेशन डिब्बा है। टी.सी. को टिकट दिखाते उसने हाथ जोड़ दिए। "ये जनरल टिकट है। अगले स्टेशन पर जनरल डिब्बे में चले जाना। वरना आठ सौ रूपए की रसीद बनेगी।" कह टी.सी. आगे चला गया। पति-पत्नी दोनों बेटी को पहला बेटा होने पर उसे देखने जा रहे थे। सेठ ने बड़ी मुश्किल से दो दिन की छुट्टी और सात सौ रूपए एडवांस दिए थे। बीबी व लोहे की पेटी के साथ जनरल बोगी में बहुत कोशिश की पर घुस नहीं पाए थे, लाचार हो स्लीपर क्लास में आ गए थे। "साब, बीबी और सामान के साथ जनरल डिब्बे में चढ़ नहीं सकते। हम यहीं कोने में खड़े रहेंगे। बड़ी मेहरवानी होगी।" टी.सी. की ओर सौ का नोट बढ़ाते हुए कहा।

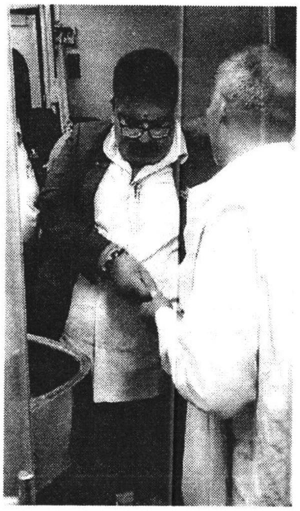

"सौ में कुछ नहीं होता। आठ सौ निकालो। वरना उतर जाओ।" "आठ सौ तो गुड्डों की डिलीवरी में भी नहीं लगे साब। नाती को देखने जा रहे हैं। गरीब लोग हैं। जाने दो साब।" अबकी बार पत्नी से कहा "तो फिर ऐसा करो, चार सौ निकालो। एक रसीद बना देता हूँ, दोनो बैठे रहो।"

ये लो साब, रसीद रहने दो, दो सौ रूपए बढ़ाते हुए आदमी बोला, नहीं नहीं रसीद तो बनानी ही पड़ेंगे, उपर से आर्डर है। रसीद तो बनेगी ही। चलो, जल्दी चार सौ निकालो। वरना स्टेशन आ रहा है। उतरकर जनरल बोगी में चले जाओ। इस बार कुछ डांटते हुए टी.सी. बोला। आदमी ने चार सौ रूपए ऐसे दिए मानो अपना कलेजा निकालकर दे रहा हो।

दोनों पति-पत्नी उदास रूआंसे ऐसे बैठे थे, मानो नाती के पैदा होने पर नहीं उसके शोक में जा रहे हो। कैसे एडजस्ट करेंगे। ये चार सौ रूपए? क्या वापसी की टिकट के लिए समधी से पैसा मांगना होगा? नहीं-नहीं, आखिर में पति बोला, सौ-डेढ़ सौ तो में ज्यादा लाया ही था। गुड्डी के घर पैदल ही चलेंगे। शाम को खाना नहीं खायेंगे। दो सौ तो एडजस्ट हो गए और हाँ, आते वक्त पैसेंजर ट्रेन से आएंगे, सौ रूपए बचेंगे। एक दिन जरूर ज्यादा लगेगा। सेठ भी चिल्लाएगा। मगर मुन्ने के लिए सब सह लुंगा। मगर फिर भी ये तीन सौ ही हुए।

"ऐसा करते हैं, नाना-नानी की तरफ से जो हम सौ-सौ देनेवाले थे न, अब दोनों मिलाकर सौ देंगे। हम अलग थोड़े ही हैं। हो गए न चार सौ एडजस्ट।" पत्नी ने कहा। मगर मुन्ने के कम करना और पति की आँख छलक पड़ी, मन क्यूँ भारी करती हो जी। गुड्डी जब मुन्ना को लेकर घर आएगी, तब तो सौ ज्यादा दे देंगे, कहते हुए उसकी आँख भी छलक उठीं। फिर आँख पोछते हुए बोली- अगर मुझे कहीं मोदी जी मिले तो कहूँगी, "इतने पैसे की बुलेट ट्रेन चलाने के बजाय इतने पैसों से हर ट्रेन में चार-चार जनरल बोगी लगा दो, जिससे न तो हम जैसों की टिकट होते हुए जलील होना पड़े और न ही हमारे मुन्ने के सौ रूपए कम हों।" उसकी आँखें फिर छलक पड़ी "अरी पगली, हम गरीब आदमी हैं, हमें वोट देने का अधिकार है, पर सलाह देने का नहीं।" रो मत!

❑ अहना परवीन
सुपुत्री : शाकिर अहमद
हिंदी अनुवादक
मुख्यालय आई.जी.एस.आर (नॉर्थ)

प्रेरणात्मक कहानी

एक चूहा एक कसाई के घर में बिल बनाकर रहता था। एक दिन चूहे ने देखा कि उस कसाई और उसकी पत्नी थैले से कुछ निकाल रहे हैं। चूहे ने सोचा कि शायद कुछ खाने का सामान है।

उत्सुकतावश देखने पर उसने पाया कि वह एक चूहेदानी थी। खतरा भांपने पर उसने पिछवाड़े में जाकर कबूतर को यह बात बताई कि घर में चूहेदानी आ गई है। कबूतर ने मजाक उड़ाते हुए कहा कि घुसे क्या? मुझे कौनसा उसमें फंसना है? निराश चूहे ने ये बात मुर्गे को बताने गया। मुर्गे ने खिल्ली उड़ाते हुए कहा कि... जा भाई... ये मेरी समस्या नहीं है।

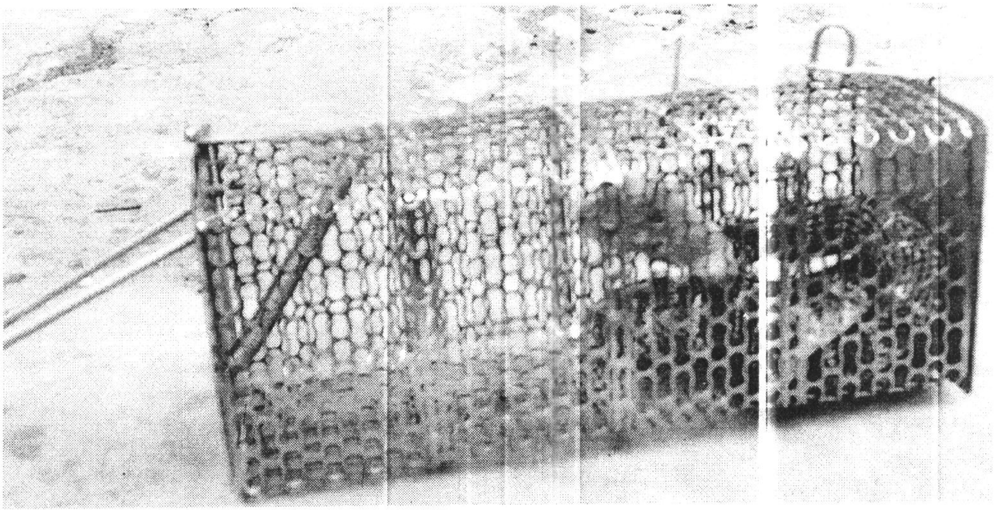

हताश चूहे ने बाडे में जाकर बकरे को यह बात बताई और बकरा हँसते-हँसते लोटपोट होने लगा।
उसी रात, चूहेदानी में खटाक की आवाज हुई, जिस में एक जहरीला सांप फंस गया था। अंधेरे में उसकी पूँछ को चूहा समझकर उस कसाई की पत्नी ने उसे निकाला और सांप ने उसे डस लिया। तबीयत बिगड़ने पर उस व्यक्ति ने हकीम को बुलाया। हकीम ने उसे कबूतर का सूप पिलाने की सलाह दी। कबूतर अब पतीले में उबल रहा था।

खबर सुनकर उस कसाई की कई रिश्तेदार मिलने आ पहुँचे जिसके भोजन प्रबंध हेतु अगले दिन उसी मुर्गे को काटा गया। कुछ दिन बाद उस कसाई की पत्नी सही हो गयी, तो खुशी में उस व्यक्ति ने कुछ अपने शुभचिंतकों के लिए एक दावत रखी तो बकरे को काटा गया। चूहा अब दूर जा सका था बहुत दूर..........

शिक्षा :- समाज का एक अंग, एक तवका, एक नागरिक खतरे में है तो पूरा देश खतरे में हैं।

कठिन एवं सख्त प्रशिक्षण

❑ फरीदा परवीन
धर्मपत्नी : शाकिर अहमद
हिंदी अनुवादक
मुख्यालय आई जी ए आर (नार्थ)

बाज पक्षी जिसे हम ईगल या शाहीन भी कहते है। जिस उम्र में बाकी परिंदों के बच्चे चिचियाना सीखते है उस उम्र में एक मादा बाज अपने चूंजे को पंजे में दबोच कर सबमें ऊँचा उड़ जाती है। पक्षियों की दुनिया में ऐसी सख्त एवं कठोर ट्रेनिंग किसी भी ओर की नहीं होती।

मादा बाज अपने चूंजे को लेकर लगभग 12 कि.मी ऊपर ले जाते है। जितने ऊपर अमूमन जहाज उड़ा करती है और वह दूरी तय करने में मादा बाज 7 से 9 मिनट का समय लेती है। यहाँ से शुरू होती है उस नन्हे चूजें

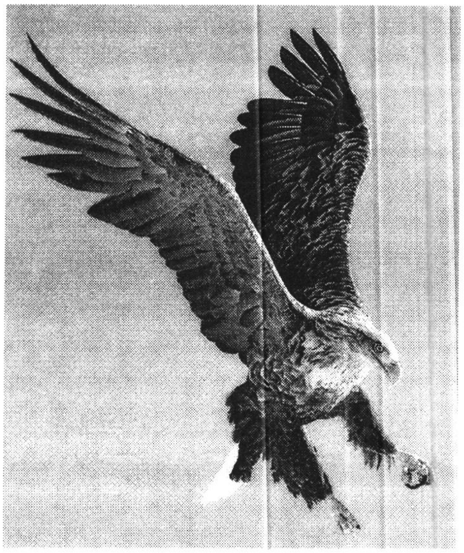

की कठिन परीक्षा। उससे अब यहां बताया जाएगा कि तू किसलिए पैदा हुआ है? तेरी दुनिया क्या है? तेरी ऊंचाई क्या है? तेरा धर्म बहुत ऊँचा है और फिर मादा बाज उसे अपने पंजों से छोड़ देती है। धरती की ओर ऊपर से नीचे आते वक्त लगभग दो कि.मी. उस चूजे को आभास ही नहीं होता कि उसके साथ क्या हो रहा है। 7 कि.मी. की अन्तराल के आने के बाद उस चूजे के पंख जो कंजाईन से जकड़े होते है, वह खुलने लगती है।

लगभग 9 कि.मी आने के बाद उसके पंख पूरे खुल जाते है। यह जीवन का पहला दौर होता है जब बाज का बच्चा पंख फड़फड़ाता है। अब धरती से लगभग 3000 मीटर दूर है लेकिन अभी वह उड़ना नहीं सिख पाया है। अब धरती के बिलकुल करीब आता है जहाँ से वह देख सकता है, उसके स्वामित्व को। अब उसकी दूरी धरती से महज 700/800 मीटर होती है लेकिन उसका पंख अभी उतना मजबूत नहीं हुआ है कि वह उड़ सकें। धरती से लगभग 400/500 मीटर दूरी पर उसे अब लगता है कि उसके जीवन की शायद यह अंतिम यात्रा है। फिर अचानक से एक पंजा उसे आकर अपनी गिरफ्त में लेता है। और अपने पंखों के दरम्यान समा लेता है। यह पंजा उसकी माँ का होता है जो ठिक उसके ऊपर चिपक कर उड़ रही होती है। और उसकी ट्रेनिंग निरन्तर चलती रहती है, जब तक कि वह उड़ना नहीं सिख जाता।

यह ट्रेनिंग एक कमांडो की तरह होती है। तब जाकर दुनिया को एक बाज मिलता है। अपने से दस गुना अधिक वजनी प्राणी का भी शिकार करता है। हिंदी में एक कहावत है- "बाज के बच्चे मुँडेर पर नहीं उड़ते।" बेशक अपने बच्चों को अपने से चिपकाकर रखिए पर उसे दुनिया की मुश्किलों से रुबरु कराइए, उन्हें लड़ना सिखाइए बिना आवश्यकता के भी संघर्ष करना सिखाइए।

वर्तमान समय की अनन्त सुख सुविधाओं की आदत व अभिभावकों के बेहिसाब लाड-प्यार ने मिलकर, आपके बच्चों को "ब्रायलर मुर्गे" जैसा बन दिया है जिसके पास मजबूत टंगड़ी तो है पर चल नहीं सकता। वजनवार पंख तो हैं पर उड़ नहीं सकते क्योंकि "गमले के पौधे और जंगल के पौधे में बहुत फर्क होता है।"

❑ प्रमोद रजक
हिंदी प्राध्यापक, कोहिमा केन्द्र
प्रधान महालेखाकार (ले. व ह.) का कार्यालय
नागालैण्ड, कोहिमा

हिन्दी

राष्ट्रभाषा से राजभाषा तक

हिन्दी भाषा पुरातन काल से ही अपनी अभिव्यक्ति की सहजता, सरलता एवं सुगमता के कारण जनमानस की लोकप्रियता को हासिल करने में सक्षम रही है। इसने देश के राष्ट्रीय व्यक्तित्व को उजागार करने में अपनी सफल भूमिका अदा की है, चाहे वो देश की सांस्कृतिक, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक, राष्ट्रप्रेम व भक्ति तथा साहित्यिक आदर्शों की अभिव्यक्ति क्यों न हो।

राष्ट्रभाषा का संबंध देश के समस्त हितों से होते हुए सीधे राष्ट्रवादिता से होता है। हिन्दी देश के विभिन्न प्रान्तों की भाषा, बोली व इसकी संस्कृति में बाधक बने बिना अपनी लोकप्रियता के इस पद को प्राप्त किया है। साथ ही हिन्दी ने सदा व्यापक उद्देश्य के साथ भिन्न-भिन्न प्रान्तों की भाषाओं व बोलियों के शब्द, पदावली, लोकोक्ति आदि को आत्मसात भी किया है। यही कारण है कि हिन्दी भाषा हमारे देश के अहिंदी भाषी क्षेत्रों में भी लोकप्रियता को हासिल किया।

हिन्दी के राष्ट्रभाषा रूप की अवधारणा मुख्यत राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान विकसित हुई। संपूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में बांधने और अपनी राष्ट्रीय व जातीय अस्मिता को जागृत कर स्वतंत्रता प्राप्त करने की प्रेरणा देने के लिए तात्तकालीन राजनेताओं, विद्वानों व साहित्यकारों ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किए थे। इसी संदर्भ में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी द्वारा सन् 1917 भरुच (गुजरात) में सर्वप्रथम राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी को मान्यता प्रदान की गई।

हिन्दी की इसी लोकप्रियता व उसकी अभिव्यक्ति क्षमता को देखते हुए एवं इसके समुचित विकास व प्रचार-प्रसार हेतु 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने इसे देश की राजभाषा के रूप में अपनाया। बाद में सन् 1950 में संविधान द्वारा देवनागरी लिपि में लिखित हिन्दी भाषा को राजभाषा घोषित किया।

यह कहना अनुचित न होगा कि वर्तमान में हिन्दी भाषा देश की अखण्डता व इसकी भावनात्मक एकता को मजबूती प्रदान करने में सक्षम है। अतएव इसी संदर्भ में भारत सरकार की राजभाषा नीतियों के अंतर्गत हिन्दी भाषा को संघ की राजभाषा के रूप में विकास व प्रचार-प्रसार की समुचित व्यवस्था की गई है।

हिन्दी भाषा के विकास हेतु इसे संघ सरकार द्वारा कम्प्यूटर-विज्ञान, सूचना प्रौद्योगिकी से जोड़कर विभिन्न टूल्स विकसित किए गए हैं, ताकि हम इसका पूर्ण अनुप्रयोग व व्यवहार करके इस भाषा को विकास की दिशा में अग्रसर कर सकें। यूनिकोड, हिन्दी-की बोर्ड, लीला स्वयं हिन्दी-शिक्षण सॉफ्टवेयर, अनुवाद ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म, श्रुतलेखन, ई-महाशब्दकोश, कंठस्थ अनुवाद आदि राजभाषा द्वारा विकसित ऐसे ही प्रक्रम हैं।

हिन्दी शिक्षण योजना भी राजभाषा विभाग द्वारा संचालित ऐसा ही प्रक्रम है, जिसके अन्तगर्त प्रतिवर्ष पूरे भारतवर्ष में विभिन्न केन्द्रों के माध्यम से हजारों कर्मियों व अधिकारियों को सत्रवार प्रशिक्षण सफलतापूर्वक प्रदान किये जा रहे हैं।

❑ रूम सिंह
हिंदी अनुवादक
नायब सूबेदार
3 (नागा हिल्स) बटालियन
असम राइफल्स

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का जुनून

जगद्गुरू भारत कहलाता, है इसकी शान निराली।
२१ जून के अवसर पर, योगासान प्रेमी जनता हो जाती मतवाली।। १।।
सन् दो हजार पन्द्रह में, यूएनओ ने इसे अंतर्राष्ट्रीय दिवस बनाया।
भारतमाता की संतानों ने, परचम एकता का लहराया।। २।।

एकता और बंधुत्व का नारा, भारत सबको देता रहता है।
मगर मुट्ठी भर दहशतगर्दों की, आँख का काँटा रहता है।। ३।।
हमने भी उनको इस जग में, अँगूठा खूब दिखाया है।
इसी लिए तो भारत का, परचम दुनिया में लहराया है।। ४।।

जाति-पाँति और ऊँच-नीच की, दीवारें ढहती दिखती हैं।
धर्म से बढ़कर स्वास्थ्य हो गया, ये उम्मीदें योग दिवस में दिखती हैं।। ५।।
दीर्घायु होने की लालसा, सबके मन में जागी हैं।
आलस्य और मनमुटाव की बुढिया, उल्टे पैरों भागी हैं।। ६।।

बाबा रामदेव से प्रेरित हो, लोगों ने संकल्प लिया।
योगासान को बहुतों ने, तन-मन से स्वीकार किया।। ७।
बहुत से गोरों-कालों ने, अपने बच्चों को बतलाया।
निरोगी रहने का मूलमंत्र, मुफ्त में भारत से आया।। ८।।

न कोई कस्टम् ड्यूटी है, और न कोई है टैक्स।
ज्यादा और जानकारी चाहिए, तो मंगवालो भारत से फैक्स।। ९।।
अरोक्ष-परोक्ष से सभी जुड़े हैं, योगासन से भाई।
वाह ! वाह हो रही हर जगह, जो योगासन की भाई।। १०।।

अद्‌भुत बड़ा नजारा देखा, उमड़ा जन सैलाब।
गुब्बारे से भरे जोश में, देते मूँछों पर ताव।। ११।।
वे अपनी छाती पीट रहे हैं, जिनकी हुई दुकानदारी पर चोट।
दस पैसे की गोली पर लेते हैं, कुरकुरा दस रूपये का नोट।। १२।।

वाह ! वाह ! कैसा हो रहा, योगसन का चमत्कार।
सात समंदर पार भी, पहुँची भारत की हुँकार।। १३।।
है भारत की शान निराली, हो रही गला फाड़के जय जयकार।
दुम दबाकर रोग भागते, सुन सुन इसकी ललकार।। १४।।

होगा बेड़ा गरक उसी का, जिसने नहीं किया है योग।
पानी की तरह रूपया बहाएगा, हो सकते हैं असंख्यों रोग।। १५।।
पहले लोगों की आयु, होती थी सौ-सौ साल।
लेकिन अब क्यों हो रहे? सात दशक हेतु बेहाल।। १६।।

योगासन से भाई-बहनों होंगे, स्वास्थ्य में अद्‌भुत चमत्कार।
निरोगी, तेजस्वी, दीर्घायु वीर्यवान रहोगे, रूपया न होगा बेकार।। १७।।
अन्यथा मक्खियाँ मारेंगे बैंठे, टपकाएंगे कौडी-कौडी को लार।
तो भाई-बहनों अब क्या देख रहे हो, मारो रोगों को ललकार।। १८।।

हर कोई यिद ध्यान रखेगा, अपने स्वास्थ्य का भाई।
ताउम्र सानदमयी रहेगा, योगासान का उपदेश यही भाई।। १९।।
"रूम सिंह" भी सजग हो गया, योगासन हित रोज।
पुनः हर्षोल्लास अब हुआ चौगुना, खिला कुम्हलाया हुआ सरोज।। २०।।

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस की जय हो, जय जय भारत देश।
फूले-फले नित्य योगासन, रफू-चक्कर हो सभी क्लेश।। २१।।
बाल-बृंद और नर-नारी, इसको घुट्‌टी सा पी जाओ।
मुफ्त में सदा रहो निरोगी, गीत नित योगासन के गाओ।। २२।।

पावन मिट्टी

❑ अलीना परवीन
सुपुत्री : एस. ए. खान
हिंदी अनुवादक
मुख्यालय महानिरीक्षक
असम राइफल्स (नार्थ)

जिस मिट्टी में हमने जन्म लिया,
उस मिट्टी का कण-कण सोना है।
ऐसी पावन मिट्टी को चूम के,
माथे पर लगाना सलोना है।

भस्म, विभूति, केसर चंदन
करते शीतल तन और मन
लेकिन इस मिट्टी के बिना
नीरस है हम सब का जीवन
ऐसे में इस अनमोल रत्न को
हर हाल में हमें सजाना है।
जिस मिट्टी में हमने जन्म लिया
उस मिट्टी का कण-कण सोना है।

एक रंग की मिट्टी से उपजे, कितने रंग,
हर रंग की अपनी-अपनी खुशबू
कभी न डाले रंग में भंग
इसलिए इस मिट्टी की ताकत
घर-घर में हमें पिरोना है।
जिस मिट्टी में हमने जन्म लिया
उस मिट्टी का कण-कण सोना है।

अपनी मिट्टी अपना देश
जहां जो चाहे करे निवश
तन-मन-धन हर रोज बदलते
जो बदले नहीं वो है मिट्टी और देश
मिट्टी में जीना, मिट्टी में मरना
मिट्टी रंग-रंग का खजाना है।
जिस मिट्टी में हमने जन्म लिया
उस मिट्टी का कण-कण सोना है।

❑ **हेमलता छेत्री**
धर्मपत्नी : बीजू छेत्री
हवलदार/क्लर्क
मुख्यालय महानिरीक्षक
असम राइफल्स (उत्तरी)

मैं नारी हूँ

मैं नारी हूँ। वात्सल्य से भरी
कभी बेटी तो कभी बहन बनी
आज पत्नी और माँ हूँ।
मैं नारी हूँ।

कभी सोचती पंख लगाकर उड़ जाऊँ
कोई बेड़ी मुझे न रोके बस कुछ
ऐसा कर जाऊँ
मेरे एहसास जो कभी समझ न सका कोई
उसे मैं आँखो से कह जाऊँ
मैं नारी हूँ।

स्नेह से भरी माँ को जाना तब
जब मैं माँ बनी
है बॉहे मेरी इन पहाड़ो जैसी
मजबूती से सबको गले लगाती
दुख हो या सुख
कभी नहीं घबराती
मैं नारी हूँ।

❑ रेमा जेयन
धर्मपत्नी : जे एस नायर
नायब सूबेदार/क्लर्क
मुख्यालय महानिरीक्षक
असम राइफल्स (उत्तरी)

ऐसी होती है माँ

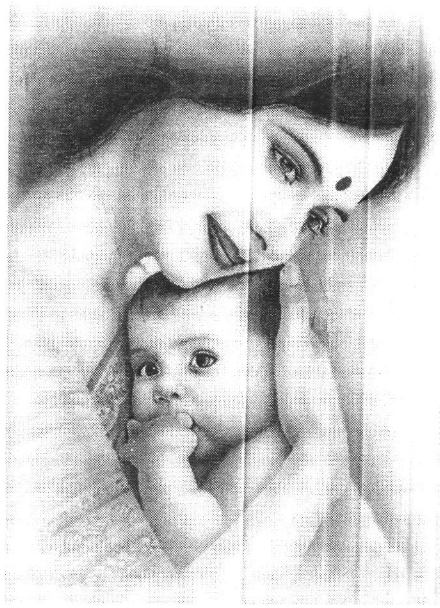

हमारे हर मर्ज की दवा है माँ,
कभी डांटती है हमें, तो कभी गले लगा लेती है माँ,
हमारी आँखों के आँसूं, अपनी आँखों में समा लेती है मां,
अपने होठों की हँसी, हम पर लूटा लेती है माँ,
हमारी खुशियों में शामिल होकर, अपने गम भुला देती है माँ,
जब भी कोई ठोकर लगे तो हमें तुरन्त याद आती है माँ।
दुनियां की तपिश में, हमें आँचल की छाया देती माँ,
खुद चाहे कितनी थकी हो, हमें देखकर अपनी थकान भूल जाती है माँ,
प्यार भरे हाथों से, हमेशा हमारी थकान मिटाती है माँ,
बात जब भी हो लजीज खाने की, तो हमें याद आती है माँ,
रिश्तों को खुबसुरती से निभाना सिखाती है माँ,
लब्जों में जिसे बयां नहीं किया जा सके ऐसी होती है माँ,
भगवान भी जिसकी ममता के आगे झुक जाते हैं ऐसी होती है माँ।

❑ फरीदा परवीन
धर्मपत्नी : शाकिर अहमद
हिंदी अनुवादक
मुख्यालय महानिरीक्षक
असम राइफल्स (उत्तरी)

नारी

नारी तू महान, है,
तेरा भी अभिमान है।
व्यक्ति का तू रूप है,
तूझमें भी भगवान है।
नारी तू महान है।।

देख तेरी ये प्यारी ममता,
तुझपे सब कुर्बान हैं।
तूने हमको जन्म दिया है,
तुझसे ही ये जान है।
नारी तू महान है।।

जिस सर पर हो तेरी छाया,
उसके लिए तू बरदान है।
तेरे पावन चरण छू कर,
दिया ये हमको दान है।
नारी तू महान है।।

कई अनोखे रूप लिए,
ये नारी का इतिहास है।
यमराज जी प्राण छुड़ाये
किया ये नामुमकिन काम है।
नारी तू महान है।

नारी तू है जग की माता,
तुझ से यह जहान है।
तेरे पावन चरणों में,
हम सब का प्रणाम है।
नारी तू महान है।

❑ मुकेश कनौजिया
नं. जी-38611 हवलदार, जनरल ड्यूटी
3 (नागा हिल्स) बटालियन
असम राइफल्स

बीबी फौज वाले की

हाय! राम तेरी किस्मत तो लगती एकदम सो गई है,
जबसे मेरी शादी एक उल्लू से पति से हो गई है।
दो पैसे भी नहीं कमाते सदा गबड्डी करते हैं,
रात-दिन बस पलंग तोड़ते व उल्टा हुकुम चलाते हैं।
भगवान! बनाया क्यों मुझे बीबी ऐसे उल्लू की,
अगले जनम में मुझे बनाना बीबी फौज वाले की।।

और ऊपर से पोस्टिंग हो जाए इनकी एलओसी में,
बिन तख्तोताज के राज करूँगी लगाए मेंहदी पैरों में।
घर से निकले सैंयाँ जी महिनों बाग घर आएंगे,
बिना किसी रगड़े-झगड़े के दो पैग लगा सो जाएंगे,
गजब निराली माया होगी व्हिस्की व रम के प्याले की।
अगले जनम में मुझे .... ।।1।।

फौज वाले जीवन जीते पत्नी संग रोमांस में,
आधी सैलरी खर्च करें पत्नी की मेंटिनेंस में।
पतिदेव की सर्विस ज्यों-2 बढ़ती जाएगी,
सच कहती हूँ मेरी सुंदरता और निखरती जाएगी।
परवाह नहीं बनाना मुझको गोरे की या काले की,
अगले जनम में मुझे ...... ।।2।।

जितने भी शौक मेरे मैं सब पूरे करवाऊँगी,
जब तक हाकिम न बन जाएं तब तक नौकरी करवाऊँगी।
इससे पहले अगर नौकरी छोड़ने की वह करेंगे बात,
सच कहती हूँ ऐन वक्त पर करूँगी दो-2 हाथ।
घुड़क-घुड़क कर फिट कर दूँगी बुद्धि पागल मतवाले की।
अगले जनम में मुझे ...... ।। 3।।

फौज वाले हद से ज्यादा बीबी की केयर करते हैं,
बड़े-2 तुर्रमखाँ भी गृहलक्ष्मी से डरते हैं।
कभी-2 गलती से ही उससे गुस्सा करते हैं,
थोड़ी आँख दिखाते ही घिघियाने लगते हैं।
बत्ती गुल हो जाती है अच्छी से अच्छी किस्मत वालों की।
अगले जनम में मुझे ...... ।।4।।

पर अगले जनम तक इंतजार करना भी मुश्किल हो जाएगा,
सबसे अधिक फौजियों हेतु यह दिल पागल हो जाएगा।
काश! इसी जनम में मिल जाता कोई फौजी इस मस्तानी को,
सच कहती हूँ छोड़ भागूँगी इस पगले, उल्लू-अज्ञानी को।
परवाह नहीं बनाना मुझको गोरे की या काले की,
अगले जनम में मुझे बनाना बीबी फौज वाले की।

❑ मुकेश कनौजिया
नं. जी-386।1 हवलदार, जनरल ड्यूटी
3 (नागा हिल्स) बटालियन
असम राइफल्स

एक बात समझ में आई नहीं

एक बात समझ में आई नहीं,
मम्मी ने समझाई नहीं।
नेहरु जी कैसे चाचा हैं ?
जब पापा के कोई भाई नहीं ।।1।।

एक बात समझ में आई नहीं,
मम्मी ने समझाई नहीं।
चन्दा मामा कैसे मामा हैं ?
जब मम्मी के कोई भाई नहीं ।।2।।

एक बात समझ में आई नहीं,
मम्मी ने समझाई नहीं।
आसमान का रंग क्यों नीला है ?
जब उसमें नील किसी ने मिलाई नही ।।3।।

एक बात समझ में आई नहीं,
मम्मी ने समझाई नहीं।
भालू के क्यों बाल हैं लंबे ?
क्यों उसने कटिंग करवाई नहीं ?
क्या वह भी गंदा बच्चा है ?
या फिर जंगल में कोई नाई नहीं ।।4।।

एक बात समझ में आई नहीं,
मम्मी ने समझाई नहीं।
एक बात समझ में आई नहीं,
मम्मी ने समझाई नहीं।

गत अंक के बारे में सुधी पाठकों की प्रतिक्रिया

☐ आपके पत्र सं:प्रशा..हिक/ले.व ह. /नागांचल / 2018-19/2598-2679 दिनांक 28.03.2019 के साथ आपक कालर्यालय की पत्रिका"नागांचल" की प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद।

पत्रिका में सम्मिलित की गई सभी रचनाएँ ज्ञानवर्धक, रोचक व प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में सम्मिलित कार्यालय में हिंदी पखवाड़े से संबन्धित सभी छायाचित्र आकर्षक हैं। नागालैंड में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं इसकी वर्तमान स्थिति पर समीक्षात्मक लेख "हिंदी अध्ययन": समस्याएँ एवं निराकरण की संभावनाएं" सराहनीय है। लेख "पूर्वोत्तर भारत के साहित्य का नागरी लिपि में प्रकाशन" ज्ञानवर्धक है। अन्य रचनाओं में "दोयागं झील-नागालैंड का मनोरम पर्यटन स्थल", "बुलाते है पहाड़" "भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी" "कुछ ऐसा है मेरा देश" एवं "दुखती रग" सराहनीय हैं।

पत्रिका के सफल सम्पादन तथा प्रकाशन हेतु संपागक मण्डल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ववल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।

(कुमार चंद्रेश)
उप महालेखाकार/प्रशासन
कार्यालय महालेखाकार(लेख एवं हकदारी)- द्वितीय,
उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

☐ आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका "नागांचल" का 16 वां अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका की सभी रचनाएं प्रशंसनीय हैं। प्रमोद रजक की "हिंदी साहित्य" शंकर कुमार ठाकुर की "दोयांग झील" कुल प्रसाद उपाध्याय की "वाह रे मोबाइल, तेरी बलिहारी" चन्द्रमणि सिंह की "सूर्य सबका गुरू" शबिना आदिव की "हमेसा एक-दूसरे के हक में" रचनाएं विशेष तौर पर सराहनीय हैं। पत्रिका के सभी रचनाकारों मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाए।

सहायक लेखा अधिकारी (हिंदी कक्ष)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
चण्डीगढ़- 160017

☐ आपके द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका "नागंचल" के 16वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है तथा मुद्रण एवं प्रकाशन उत्तम है। भारत के सुदूरपूर्व में स्थित एक हिंदीतर भाषी क्षेत्र द्वारा किए गए प्रयास हिंदीं के प्रति आप सबका सम्मान एवं समर्पण प्रदार्शित करता है जो वास्तव में प्रशंसा के योग्य है। संकलित समस्त लेख एवं रचनाएँ सरस, पठनीय एवं संग्रहणीय हैं। श्री शंकर कुमार ठाकुर का लेख "दोयांग झील"नागालैण्ड के पर्यटन स्थल के बारे में संक्षिप्त जानकारी देता है। श्री चितरंजन लाल भारती का लेख "बुलाते हैं पहाड़" पहाड़ों में होने वाले रोमांच और कठिनाइयों को व्यक्त करता है। श्री अयान अहमद के चुट्कूले "आज की शाम लालू के नाम" हास्यपरक है। कविताओं में सुश्री ज्योत्सना सिंह की "हिंदी हम सबकी परिभाषा" श्री रवि प्रताप यादव की "कुछ ऐसा है मेरा

देश" एवं श्री संजय कुमार शर्मा की ...भारत की बेटियाँ.. आदि काफी रोचक एवं उल्लेखनीय हैं।

हिंदी भाषा की सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका यह प्रयास सराहनीय हैं, जिसके लिए आपका राजभाषा परिवार बधाई का पात्र है।

लेखाधिकारी/हिंदी
कार्यालय महालेखाकार(लेख एवं हकदारी)- प्रथम
उ.प्र., इलाहबाद

☐ आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित वार्षिक हिंदी पत्रिका "नागंचल" के 16वें अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक है। साथ-ही पत्रिका की साज-सज्जा भी बहुक सुन्दर है। कविताएं एवं लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं। श्री थून्बुई जेलियांग द्वारा लिखित लेख "हिंदी अध्ययन" श्री शंकर कुमार ठाकुर द्वारा लिखित लेख "दोयांग झील" श्री रविन्द्र प्रसाद श्रीवास्तव द्वारा लिखित कहानी "भारतरत्न अटल बिहारी बाजपेयी" श्री कूल प्रसाद उपाध्याय द्वारा लिखित लेख "वाह रे मोबाइल, तेरी बलिहारी हैं" श्री विकाश कुमार झा द्वारा लिखित लेख "साँप", श्री चन्दमणि सिंह द्वारा लिखित लेख "सूर्य सबका गुरू" श्री अयान अह्मद द्वारा लिखित चुटकले "आज की शाम लालू के नाम" और श्री सौरभ सिंह द्वारा लिखित कविता "मैं ऊँचे पर्वत का वासी" और श्री संजय कुमार शर्मा द्वारा लिखित कविता "भारत की बेटियाँ" सर्वाधिक रोचक एवं शिक्षाप्रद हैं। पत्रिका के उज्जवल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिए बहुत-बहुत शुभकामानाएं।

व. लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष
कार्यालय प्रधान महालेखाका
(आर्थिक एवं क्षेत्र राजस्व लेखापरीक्षा) पश्चिम बंगाल

☐ आपके कार्यालय से हिन्दी पत्रिका नागांचल का सोलहवां अंक प्राप्त हुआ। पाठ्य सामग्री अत्यंत रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। राजभाषा के प्रचार-प्रसार और (हिन्दी के प्रयोग को हिन्दी अध्ययन एवं हिन्दी-साहित्य) लेखों से गति मिली है। आप लोग सहज ही सराहना के पात्र हैं। प्रत्येक पृष्ठ एक नयी पहल है, जो कि इस पत्रिका का महत्व और भी बढ़ा देती है। दोयांग झील का यात्रा वृतांत ऐतिहासिक एवं सामाजिक दृष्टि से परिपक्व है। राजनीतिक परिपेक्ष्य भारतरत्न अटल बिहारी बाजपेयी लेख के द्वारा अत्यंत सुगमता के साथ प्रस्तुत किया गया है।

विकास कुमार झा के लेख "ब्राह्मणवाद" और "साँप" समाज के कठोर सत्य से अवगत कराते हैं और यह जानता कि मैं कौन हूँ, एक मात्र पहलै एवम् आखिरी क्रांतिकारी कदम है और इस भावना को उन्होंने एक जनतंत्र के निवासी की हैसियत से बखूबी समझा है। उनके इन लेखों का कोई सानी नहीं है। ये दोनों ही लेख "सीरियस कॉमेडी" के श्रेष्ठ उदाहरण हैं। अत इन रचनाओं के लिए सादर धन्यवाद। इसके विपरीत कॉमेडी का सीधा प्रतिपादन अयान अहमद द्वारा "आज की शाम लालू के नाम" में चुटकुलों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। यह कहना गलत नहीं होगा कि प्रचलित प्रणाली के विरुद्ध यह एक नयी पहल है।

सुझाव के अंतर्गत वर्तनी के शुद्धिकरण पर और ध्यान दिये जाने की आवश्यकता है। गलतियाँ करना अपने आप को सही होने की अनुमति देना है। अंततः पूर्णता प्राप्य नहीं है, लेकिन यदि पूर्णता का पीछा किया जाए तो उत्कृष्टता को पाया जा सकता है। मंगलकामना के साथ।

अभिजित
उप महालेखाकार का कार्यालय (ले.प.ह.) त्रिपुरा,
अगरतला

☐ आपके कार्यालय की वार्षिक पत्रिका "नागांचल" के 16वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ आभार। पत्रिका का मुख पृष्ठ एवं पृष्ठों की साज-सज्जा अत्यन्त आकर्षक एवं मनमोहक है। यह पत्रिका राजभाषा हिन्दी के विकास की दिशा में किया गया एक सफल प्रयास है। पत्रिका की प्रत्येक रचना रोचक, ज्ञानवर्धक एवं सामाजिक चेतना से परिपूर्ण है। वैसे तो सभी रचनाएं प्रसंशनीय हैं पर विशेष रूप से लेखों में श्री प्रमोद रजक का लेख "हिन्दी साहित्य (एख लघु यात्रा)" हिन्दी भाषा की व्याख्या काफी सुंदरता से करता है। साथ ही श्री शंकर कुमार ठाकुर का लेख "दोयांग झील (नागालैण्ड का मनोरम पर्यटन स्थल)" जिसमें दोयांग झील की खूबसूरती का वर्णन किया गया है, श्री रवीन्द्र प्रसाद श्रीवास्तव के लेख "भारतरत्न अटल बिहारी बाजपेयी" में अटल जी की खूबियों का काफी सुन्दरता से पेश किया गया है तथा श्री कुल प्रसाद उपाध्याय का लेख "वाह रे मोबाइल, तेरी बलिहारी है" अत्यधिक मोबाईल इस्तेमाल से बचने की बात करता है, जो कि उल्लेखनीय है।

कहानियों में श्री चित्तरंजन लाल भारती की "बुलाते हैं पहाड़" एवं श्री विकाश कुमार झा की कहानी "साँप" बेहद रोचक एवं मनोरंजक है। कविताओं में श्री रवि प्रताप यादव की "कुछ ऐसा है मेरा देश", श्री सौरभ सिंह की "मैं ऊँचे पर्वत का वासी" एवं श्री नायब सूबेदार की "दुखती रग" आदि समेत सभी कवितायें अत्यन्त ही उत्कृष्ट व प्रशंसनीय हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

चन्दन कुमार बढ़ई
हिन्दी अधिकारी/प्रशा.हिन्दी सेल
भारतीय लेखा तथा लेखा-परीक्षा विभाग
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक), पश्चिम बंगाल

☐ वार्षिक पत्रिका "नागांचल" का अंक 16 मिला आभार।

नागालैण्ड जैसे सीमावर्ती प्रदेश से इस साफ-सुथरी पत्रिका "नागांचल" का प्रकाशन देखकर प्रसन्नता हुई। निःसंदेह आप सराहनीय कार्य कर रहे है।

श्री थुम्बुई जेलियांग का आलेख "हिंदी अध्ययन (नागा जाति के संदर्भ में)" सामयिक और विचारणीय है। विद्वान लेखक जेलियांग ने परिश्रमपूर्वक इस आलेख को तैयार किया है। उनके चुझावों को व्यवहार में लाया जाना चाहिए। श्री प्रमोद रजक ने "हिंदी साहित्य" की लघु झलक पेश की। बेहतर होता कि वे इसे वर्तमान के संदर्भ में, पूर्वोत्तर को लेकर लिखते। श्री शंकर ठाकुर ने दोयांग झील की विहंगम झलक प्रस्तुत की है। श्री एस एन दूबे एवं श्री रविन्द्र श्रीवास्तव का लेख पठनीय है। डॉ. लोझोहो खान्यो के विचार भी पसंद आये। श्री कुल प्रसाद उपाध्याय ने अपने लेख "वाह रे मोबाईल" के माध्यम से चुटीले अंदाज में खरी व गहरी बात कह डाली है। उनका यह सामयिक व्यंग्य प्रासंगिक व विचारणीय है। श्री विकास झा की लघुकथाओं में विचार बिखर से गये हैं। नायब सूबेदार रुम सिंह की कविता "दुखती रग" मन को भाई।

विशेष शुभ सहित,

(चित्तरंजन लाल)
पर्यवेक्षक (मा. स. एवं का से) एवं (राजभाषा)
हिंदुस्तान पेपर कॉरपोरेशन लिमिटेड
कछाड़ पेपर मिल, पंचग्राम, असम

☐ प्रिय संपादक महोदय,
नागांचल

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति कोहिमा के राजभाषा

हिंदी के प्रति प्रेम का वास्तविक प्रतिबिंब बड़े ही सार्थकता के साथ और नियमित रूप से प्रकाशित हो रही "नागांचल" पत्रिका की प्रशंसा में शब्द संकुचित से लगते है और बरबस हृदय से निकल आता है:

"अब तो रहने लगा है इंतजार कि नागांचल कब आएगा,
पहाड़ियों की शीतलता हम तक अपने साथ वह लाएगा।
रोचक, रुचिकर रचनाएँ होंगी हिंदी रस में प्रेमासिक्त
पाथेय पथिक को दे जाएगा, साहित्य सुधा बरसाएगा।"

इस बार की पत्रिका भी विगत वर्षों की तरह ही न केवल सार्थक और सुंदर बन पड़ी है, बल्कि रचनाओं की स्तरीयता और विषय वैविध्य के मामले में एक कदम आगे निकल गई है। संपादक मंडल के सभी सदस्य इसके लिए निश्चय ही बधाई के पात्र हैं। पत्रिका आकार में छोटी होते हुए भी यह बिहारी के "सतसैया के दोहरे, ज्यों नाविक के तीर/ देखन में छोटे लगे, घाव करे गंभीर" को चरितार्थ करती है। थुंबुई जेलियांग जी की "नगा जनजातियों के संदर्भ में हिंदी अध्ययन की समस्याएँ एवं निराकरण" समयोपयोगी और जानकारियों से समृद्ध आलेख है। इससे अवश्य ही नगा प्रदेश में हिंदी की स्थिति को भाषा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझने में लोगों को आसानी होगी। शंकर कुमार ठाकुर जी ने दोयांग झील के बारे में जानकारी देकर प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर नागालैंड की एक छोटी सी झलक दे दी है। एस एन दूबे जी का "पूर्वोत्तर भारत के साहित्य का नागरी लिपि में प्रकाशन" विषयक आलेख सटीक और प्रासंगिक है। डॉ. लोझाहो खान्यो जी को "नागा राज्य की समस्याओं से समाधान की ओर सकारात्मक दृष्टि" जैसा ज्ञानवर्धक आलेख प्रस्तुत करने के लिए हृदय से धन्यवाद देना चाहूँगा। चित्तरंजन भारती जी की स्तरीय कहानी "बुलाते है पहाड़" के साथ साथ सुंदर कविताएँ, अटल जी को श्रद्धांजलि, लघु कथा जैसी साहित्य की विविध विधाओं, अनुवाद और हिंदी साहित्य का इतिहास सब कुछ इस बार पत्रिका में समाहित हो गया है। वाकई आपका हिंदी प्रेम, आपकी कर्मठता और सतत प्रयास प्रशंसनीय ही नहीं अपितु वंदनीय है। एक बार पुनः नराकास कोहिमा के सभी सदस्यों को अशेष बधाई और पत्रिका के संपादक मंडल को हृदय से आभार।

अनंत ऊँचाइयों को छूने का लक्ष्य लिए पत्रिका बस इसी तरह प्रकाशित होती रहे, ऐसी कामना करता हूँ।

कुल प्रसाद उपाध्याय
सदस्य सचिव, नराकास तेजपुर, असम
व हिंदी अधिकारी तेजपुर विश्वविद्यालय

मुन्सी प्रेमचंद जी की एक सुंदर कविता

ख्वाहिश नहीं मुझे, मशहूर होने की

आप मुझे पहचानते हो
बस इतना ही काफी है,
अच्छे ने अच्छा और
बुरे ने बुरा जाना मुझे,
क्यों की जिसकी जितनी जरूरत थी
उसने उतना ही पहचाना मुझे,
जिन्दगी का फलसफा भी
कितना अजीब है,
शामें कटती नहीं और
साल गुजरते चले जा रहे हैं
एक अजीब सी
दौड है ये जिन्दगी,
जीत जाओ तो कई
अपने पीछे छूट जाते हैं और
हार जाओ तो
अपने ही पीछे छोड़ जाते हैं,
बैठ जाता हूँ
मिट्टी पे अकसर
क्योंकि मुझे अपनी
औकात अच्छी लगती है
मैंने समंदर से
सीखा है जीने का सलीका
चुपचाप से बहना और
अपनी मौज में रेहना,
ऐसा नहीं की मुझमें
कोई ऐब नहीं है,
पर सच कहता हूँ
मुझमें कोई फरेब नहीं है,
जल जाते है मेरे अंदाज से
मेरे दुश्मन
क्यों की एक मुद्दत से मैंने,
न मोहब्बत बदली
और न दोस्त बदले हैं
एक घडी खरीदकर
हाथ में क्या बांध ली
वक्त पीछे ही
पड गया मेरे
सोचा था घर बनाकर
बैठुंगा सुकून से,
पर घर की जरूरतों ने
मुसाफिर बना डाला मुझे,
सुकून की बात मत कर
ऐ गालिब,
बचपन वाला इतबार
अब नहीं आता
जीवन की भाग दौड में
क्यूँ वक्त के साथ रंगत खो जाती है?
हँसती-खेलती जिन्दगी भी
आम हो जाती है,
एक सवेरा था
जब हँसकर उठते थे हम,
और आज कई बार बिना मुस्कुराए
ही शाम हो जाती है,
कितने दूर निकल गए
रिश्तों को निभाते निभाते,
खुद को खो दिया हम ने
अपनो को पाते पाते,
लोग केहते है
हम मुस्कुराते बहुत है,
और हम थक गए
दर्द छुपाते छुपाते
खुश हूँ और सबको
खुश रखता हूँ,
लापरवाह हूँ फिर भी
सब की परवाह करता हूँ,
मालूम है
कोई मोल नहीं है मेरा फिर भी
कुछ अनमोल लोगों से
रिश्ता रखता हूँ।

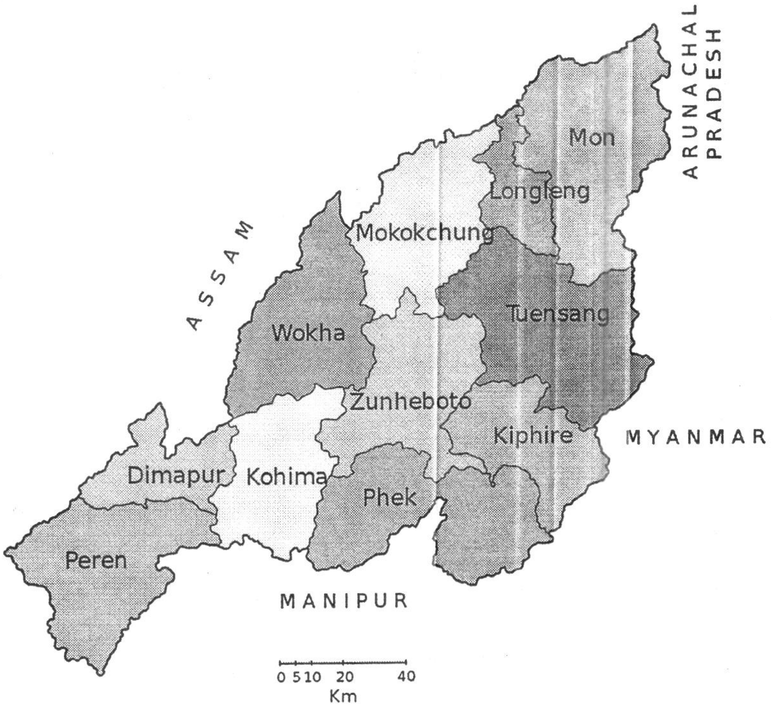
ARUNACHAL PRADESH
Mon
Longleng
Mokokchung
ASSAM
Wokha
Tuensang
Zunheboto
Kiphire
MYANMAR
Dimapur
Kohima
Phek
Peren
MANIPUR
0 5 10 20 40
Km

WELCOME

हिंदी पखवाड़ा 2018 के दौरान आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम की कुछ झलकियाँ।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कोहिमा के तत्वावधान में महालेखाकारों का कार्यालय, नागालैण्ड द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका नागांचल का सोलहवाँ अंक का लोकार्पण करते हुए मंचासीन अधिकारी गण।

हिंदी पत्रिका नागांचल के पंद्रहवें अंक में प्रकाशित चयनित लेखन के लिए नराकास, कोहिमा के माननीय उपाध्यक्ष के कर-कमलों द्वारा प्रशंसा पत्र एवं नकद पुरस्कार प्राप्त करते हुए रचनाकार गण।